MERIKHETI

मेरीखेती

जून 2025 । मूल्य : रु49

www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलियान 01 - 09

बागवानी फसलें 10 - 15

मशीनरी 15 - 23

पशुपालन–पशुचारा 24 - 28

औषधीय खेती 29 - 31

कृषि सलाह 32 - 35

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

सम्पादकीय

भारतीय कृषि का नया दौररू परंपराओं के साथ तकनीकी प्रगति की यात्रा

भारत की कृषि परंपरा न केवल हमारी अर्थव्यवस्था की बुनियाद है, बल्कि हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की आत्मा भी रही है। आज जब जलवायु संकट, जनसंख्या वृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों की घटती उपलब्धता जैसे विषय सामने हैं, तब कृषि जगत में परिवर्तन और नवाचार की लहर तेजी से फैल रही है।

तकनीकी क्रांति से बदलती खेतों की पहचान

अब किसान केवल पारंपरिक औजारों तक सीमित नहीं हैं। वे आधुनिक उपकरणों, स्मार्टफोन, ड्रोन और सैटेलाइट जैसी तकनीकों का कुशलतापूर्वक प्रयोग कर रहे हैं। स्मार्ट खेती (Precision Farming) से जल, उर्वरक और कीटनाशकों का मापित उपयोग संभव हुआ है, जिससे उत्पादन लागत कम और पैदावार अधिक हो रही है। देश के एग्रीटेक स्टार्टअप्स किसानों को डिजिटल सहायता देकर फसल सलाह, बाजार भाव और बिक्री के मंच उपलब्ध करवा रहे हैं।

जैविक खेती की ओर जागरूकता

आज का उपभोक्ता स्वास्थ्य के प्रति सजग है, और इसी के चलते जैविक खेती का विस्तार हो रहा है। सिक्किम भारत का पहला पूर्ण जैविक राज्य बन चुका है, और उत्तराखंड, केरल व मध्यप्रदेश जैसे अन्य राज्य भी इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। जैविक उत्पादों की मांग घरेलू और वैश्विक दोनों बाजारों में लगातार बढ़ रही है।

जलवायु संकट में टिकाऊ समाधान

बदलते पर्यावरण ने किसानों को नई रणनीतियों को अपनाने पर मजबूर किया है। कम पानी में उगने वाले मोटे अनाज (मिलेट्स) जैसे विकल्पों को प्राथमिकता दी जा रही है। इसके साथ ही ड्रिप सिंचाई, वर्षा जल संचयन और मृदा परीक्षण कार्ड जैसी सरकारी योजनाएं स्थायी कृषि को बढ़ावा दे रही हैं।

युवाओं और महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

अब खेती सिर्फ बुजुर्गों का काम नहीं रहा। गाँवों की महिलाएं और युवा वर्ग खेती को एक उद्यम के रूप में देख रहे हैं। किसान उत्पादक संगठन (FPOs) के जरिए महिलाएं सामूहिक खेती कर रही हैं और जैविक उत्पादों को ऑनलाइन बेच रही हैं। युवा वर्ग नई तकनीकों के साथ कृषि व्यवसाय में अपनी पहचान बना रहा है।

भविष्य की ओर एक दृढ़ कदम

आज भारतीय कृषि एक ऐसे मोड़ पर है जहाँ परंपरा और नवाचार मिलकर नई राह बना रहे हैं। आत्मनिर्भर और पर्यावरण–संवेदनशील खेती की ओर बढ़ते इस सफर में तकनीकी संसाधनों, बाजार तक पहुंच और किसान प्रशिक्षण की अहम भूमिका होगी। यही भविष्य की हरित क्रांति का आधार बनेगा।

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

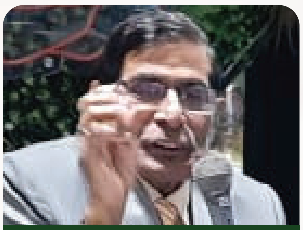

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

धान की नर्सरी विधियाँ: अधिक उपज के लिए सही तरीका

धान (Rice) भारत की एक प्रमुख खाद्यान्न फसल है, जो देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसकी खेती के लिए उपयुक्त जलवायु, समुचित जल आपूर्ति और उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता होती है। धान की खेती की शुरुआत नर्सरी तैयार करने से होती है, जहां पर बीजों से पौध तैयार किए जाते हैं, जिन्हें बाद में मुख्य खेत में रोपा जाता है।इस लेख में हम आपको धान की नर्सरी तैयार करने की तीन प्रमुख विधियों के बारे में बताएंगे, जिनसे पौध न केवल जल्दी तैयार होती है, बल्कि स्वस्थ और अधिक उत्पादक भी बनती है जिससे आपकी फसल की उपज दोगुनी हो सकती है।

धान की नर्सरी का महत्व

नर्सरी वह स्थान होता है जहां धान के बीजों को अंकुरित करके छोटे पौधों में बदला जाता है। नर्सरी में पौधों को बेहतर देखभाल और पोषण मिलता है, जिससे वे मजबूत बनते हैं और रोपाई के बाद बेहतर वृद्धि करते हैं। इससे उत्पादकता बढ़ती है, फसल की गुणवत्ता सुधरती है और पौधे रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी होते हैं।

धान की नर्सरी तैयार करने की प्रमुख विधियां

1. गीली नर्सरी विधि (Wet Nursery Method)

मुख्य विशेषताएं:

- पारंपरिक और सबसे ज्यादा इस्तेमाल की जाने वाली विधि।
- उन क्षेत्रों के लिए उपयुक्त जहां पर्याप्त पानी उपलब्ध हो।
- एक हेक्टेयर खेत के लिए लगभग 20 सेंट (800 वर्ग मीटर) क्षेत्र में नर्सरी तैयार की जाती है।

तैयारी प्रक्रिया:

- भूमि की दो बार सूखी जुताई करें।
- 1 टन एफवाईएम/कम्पोस्ट डालें और फिर खेत को सिंचित करें।
- मिट्टी को एक सप्ताह तक गीला रखें, फिर दो बार पोखर (चसवनहीपदह) करें।
- समतलीकरण के बाद 2.5 मीटर चौड़ाई और 8–10 मीटर लंबाई के बेड बनाएं।
- बिस्तरों के बीच में 30–50 सेमी की चौड़ाई में पानी निकासी के लिए नाली छोड़ें।
- पूर्व–अंकुरित बीज बुआई के 20–25 दिन बाद रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं।

2. डैपोगध्मैट नर्सरी विधि (Dapog/Mat Nursery Method)

मुख्य विशेषताएं:

- कम जगह में तैयार होने वाली उन्नत विधि।
- एक हेक्टेयर के लिए केवल 100 वर्ग मीटर (2.5 सेंट) की आवश्यकता।

- 14–20 दिनों में पौधे रोपाई के लिए तैयार।

तैयारी प्रक्रिया:

समतल क्षेत्र का चयन करें और नीचे पॉलीथीन शीट, केले के पत्ते या सीमेंटेड फर्श बिछाएं ताकि जड़ें जमीन में न घुसें।

मिट्टी मिश्रण तैयार करें:

- 70% मिट्टी + 20% कम्पोस्ट + 10% चावल की भूसी
- इसमें 1.5 किग्रा DAP या 2 किग्रा NPK (17:17:17) मिलाएं।
- लकड़ी के फ्रेम में 4 सेमी मोटाई तक यह मिश्रण भरें।
- बीजों को 24 घंटे भिगोकर, फिर 24 घंटे सेतें और अंकुरित होने पर बोएं।
- बीजों को 5 मिमी मोटी सूखी मिट्टी की परत से ढक द`।

3. सूखी नर्सरी विधि (Dry Nursery Method) (संक्षेप में उल्लेख करें)

यह विधि उन क्षेत्रों में उपयोगी होती है जहां पानी की उपलब्धता सीमित होती है। इसमें बीजों को सीधे सूखी और तैयार की गई मिट्टी में बोया जाता है और सीमित सिंचाई की जाती है।

निष्कर्ष

यदि आप धान की उपज को बढ़ाना चाहते हैं, तो नर्सरी तैयार करने की विधियों को सही ढंग से अपनाना बहुत जरूरी है। गीली, डैपोग और सूखी नर्सरी विधियों में से आप अपने क्षेत्र की जलवायु, जल–स्रोत और संसाधनों के अनुसार उपयुक्त विधि चुन सकते हैं। अच्छी तरह से तैयार की गई नर्सरी मजबूत पौधे और अधिक उपज का आधार बनती है।

अधिक उपज देने वाली मक्का की उन्नत किस्में

मक्का एक बहुपयोगी फसल है जिसका उपयोग अनाज, पशु चारे और औद्योगिक कच्चे माल के रूप में होता है। मक्का का आटा, मक्के की रोटी और अन्य खाद्य उत्पादों में इसका विशेष महत्व है। इसकी अच्छी पैदावार के लिए उपयुक्त जलवायु और उपजाऊ मिट्टी जरूरी होती है। मक्का गर्म और अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह उगता है। साथ ही, सही किस्म का चयन भी बेहतर उत्पादन और मुनाफे के लिए आवश्यक है। आइए जानते हैं कुछ प्रमुख उन्नत किस्मों के बारे में ।

मक्का की उन्नत किस्में

भारत में मक्का की कई किस्में मौजूद है इन किस्मे के फीचर्स निम्न. लिखित दिए गए है –

1. डी–941

यह किस्म खासतौर पर मध्य और पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा तथा पंजाब के लिए विकसित की गई है।

- उपजरू प्रति हेक्टेयर 40–45 क्विंटल
- विशेषताएं: नारंगी–पीले रंग के दाने, संकुलित किस्म
- पकने का समय: 80–85 दिन
- सिंचाई स्थिति: सिंचित व असिंचित दोनों क्षेत्रों के लिए उपयुक्त

2. पी.आर.ओ. 312

यह लंबी अवधि की संकर किस्म आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, राजस्थान और गुजरात के लिए उपयुक्त है।

- उपजरू 45–50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर

- विशेषताएं: पीले नारंगी रंग के दाने, सिंचित क्षेत्र के लिए बेहतर
- पकने का समय: 100–110 दिन

3. वाओ 9639

यह किस्म पूरे भारत में आसानी से उगाई जा सकती है और अच्छी पैदावार देती है।

- उपज: 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
- विशेषताएं: मध्यम अवधि की किस्म, केवल सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त
- पकने का समय: 85–95 दिन

4. गंगा 5

मक्का की यह किस्म बेहद लोकप्रिय और उत्पादक है।

- उपज: 55–60 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
- विशेषताएं: मजबूत पौधे, शंकु आकार के भुट्टे, पीले दाने
- पकने का समय: 90–95 दिन
- क्षेत्र: मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा
- सिंचाई: कम वर्षा (लगभग 30 इंच) वाले असिंचित क्षेत्रों के लिए भी उपयुक्त

5. जवाहर मक्का 216

यह किस्म रबी और खरीफ दोनों मौसमों के लिए उपयुक्त है।

- उपज: 50–55 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
- विशेषताएं: पीले या नारंगी रंग के दाने, हेलियोथोस्पोरियम पत्ती धब्बा रोग के प्रति सहनशील
- पकने का समय: 90–95 दिन
- क्षेत्र: विशेष रूप से मध्य प्रदेश के लिए विकसित

ज्वार की किस्में – अनाज और चारा दोनों के लिए ज्वार की टॉप किस्में

ज्वार एक ठंडी तासीर वाला अनाज है, जिसे लोग गर्मियों में खाना पसंद करते हैं। गेहूं की तुलना में इसमें अधिक पोषक तत्व होते हैं जैसे कैल्शियम, प्रोटीन, आयरन, पोटैशियम और विटामिन। इसकी बाजार में अच्छी मांग होने के कारण किसान ज्वार की खेती को प्राथमिकता दे रहे हैं। ज्वार को हरे चारे के रूप में भी उगाया जाता है। यह एक कम समय (3–4 महीने) में तैयार होने वाली फसल है, जिससे किसान कम समय में अच्छा लाभ कमा सकते हैं। इस लेख में हम आपको ज्वार की उन्नत किस्मों से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

अच्छे उत्पादन के लिए उन्नत बीज जरूरी

ज्वार की अच्छी पैदावार के लिए उन्नत किस्मों का चयन करना जरूरी है। सही बीज से बेहतर उपज मिलती है और मुनाफा भी बढ़ता है।

अनाज व चारा दोनों के लिए ज्वार की टॉप किस्में

इनमें से चार किस्में अनाज उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं और तीन किस्में चारे के लिए सर्वश्रेष्ठ मानी जाती हैं

अनाज के लिए उपयुक्त किस्में

CSH 16 (सीएसएच 16)

यह एक द्विउद्देशीय हाइब्रिड किस्म है जो अनाज और चारा दोनों के लिए उपयुक्त मानी जाती है। यह किस्म लगभग 105–110 दिनों में तैयार हो जाती है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें अनाज की अच्छी उपज (45–50 क्विंटल/हेक्टेयर) के साथ–साथ चारे की भारी मात्रा (200–220 क्विंटल/हेक्टेयर) मिलती है। पौधे की ऊंचाई अधिक (270–280 से.मी.) होने के कारण इसमें भरपूर सूखा चारा मिलता है। यह वर्ष 1996 में विकसित की गई थी और आज भी किसान इसे खूब पसंद करते हैं।

CSV 15 (सीएसवी 15)

यह किस्म भी अनाज और चारे दोनों के उत्पादन के लिए उपयोगी है। यह 95–105 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इससे 35–40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक अनाज और 105–110 क्विंटल चारा प्राप्त होता है। इसकी ऊंचाई 230–240 से.मी. होती है और यह वर्ष 1994 में विकसित की गई थी। यह जल्दी पकने वाली और अच्छी उपज देने वाली किस्म है।यह किस्म विशेष रूप से सामान्य वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए तैयार की गई है। यह तना छेदक और शीर्ष मक्खी जैसे कीटों के प्रति सहनशील है। इसकी औसत अनाज उपज 30–35 क्विंटलध्हेक. टेयर है, जबकि चारे की उपज 110–115 क्विंटल तक जाती है। यह वर्ष 2004 में विकसित की गई थी और कीट–प्रभावित क्षेत्रों में बेहद उपयोगी साबित होती है।

CSV 23 (सीएसवी 23)

यह किस्म पोषण से भरपूर अनाज के लिए प्रसिद्ध है। इसमें 7.15: प्रोटीन और 45.7: पाचनशील सूखे पदार्थ पाए जाते हैं। यह किस्म 110–115 दिनों में तैयार होती है और इससे 25–30 क्विंटलध्हेक्टेयर अनाज तथा 160–170 क्विंटलध्हेक्टेयर चारा प्राप्त किया जा सकता है। यह विशेष रूप से उन किसानों के लिए उपयुक्त है जो गुणवत्तापूर्ण अनाज और चारा दोनों चाहते हैं।

हरे चारे के लिए सर्वश्रेष्ठ किस्में

SSG 59–3 (एसएसजी 59–3)

यह किस्म हरे चारे के लिए सर्वाधिक लोकप्रिय और उन्नत मानी जाती है। केवल 55–60 दिनों में इसकी पहली कटाई की जा सकती है और इसके बाद 2–3 बार तक पुनः कटाई संभव है।इससे 400द्500 क्विंटलध्हेक्टेयर तक हरे चारे की भारी पैदावार होती है। इसे वर्ष 1978 में विकसित किया गया था और यह पशुपालन करने वाले किसानों के लिए आदर्श विकल्प है।

MP Chari (एमपी चरी)

यह हरे चारे के लिए दूसरी प्रमुख किस्म है। इसकी पहली कटाई 55–60 दिनों में और दूसरी कटाई 35–40 दिनों बाद की जा सकती है। इससे औसतन 350–400 क्विंटलध्हेक्टेयर चारा प्राप्त होता है। यह किस्म बहु–कटाई योग्य है और विशेष रूप से पशु चारा उत्पादन के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

Rajasthan Chari 2 (राजस्थान चरी 2)

यह किस्म विशेष रूप से कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। इसकी पौधों की ऊंचाई 190–220 से.मी. होती है और इसे 70–72 दिनों में एक बार काटा जा सकता है (एकल कटाई)।

इससे 300–350 क्विंटलध्हेक्टेयर तक चारे की पैदावार होती है। इसे वर्ष 1984 में विकसित किया गया था और यह शुष्क क्षेत्रों में चारा उत्पादन के लिए एक अच्छा विकल्प है।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने विकसित की चना की नयी किस्म पूसा चना 4037 अश्विनी

किसानों की आय में वृद्धि के उद्देश्य से कृषि विश्वविद्यालय और अनुसंध. ान संस्थान लगातार अधिक उत्पादन देने वाली फसलों की नई किस्मों का विकास कर रहे हैं। इसी दिशा में, ICAR–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI), पूसा, नई दिल्ली ने चने की एक नई उन्नत किस्म पूसा चना 4037 अश्विनी विकसित की है। इस किस्म की विशेषता यह है कि यह लगभग 36 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज देने की क्षमता रखती है। इस किस्म का नामकरण प्।त्प् की प्रतिभाशाली छात्रा एवं वैज्ञानिक डॉ. अश्विनी के सम्मान में किया गया है, जिनका हाल ही में तेलंगाना–आंध्र प्रदेश में आई बाढ़ में दुखद निधन हो गया था।

- **पूसा चना 4037 अश्विनी की मुख्य विशेषताएँ:**
- पूसा चना 4037 अश्विनी किस्म की फसल को हार्वेस्टर मशीनों की सहायता से आसानी से काटा जा सकता है, जिससे किसानों को समय और श्रम की बचत होती है।
- पूसा चना 4037 अश्विनी की औसत उपज क्षमता 2673 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है, जबकि अच्छी देखरेख में यह 3646 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन दे सकती है।
- पूसा चना 4037 अश्विनी किस्म में प्रोटीन की मात्रा 24.8: तक पाई जाती है, जिससे यह पोषण की दृष्टि से भी बेहतर विकल्प है।
- यह फ्यूजेरियम विल्ट रोग के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी है और ड्राई रूट रॉट, कॉलर रॉट तथा स्टंट जैसी अन्य बीमा. रियों के प्रति मध्यम प्रतिरोधक क्षमता रखती है।

पूसा चना 4037 अश्विनी किन स्थानों के लिए विकसित किया गया है

पूसा चना 4037 अश्विनी को विशेष रूप से उत्तर भारत के राज्यों जैसे पंजाब, हरियाणा, पश्चिम उत्तर प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड, जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तरी राजस्थान के लिए अधिसूचित किया गया है। यह किस्म चने की खेती में लगने वाले कई रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता रखती है, जिससे उत्पादन लागत कम आती है और लाभ अधिक होता है। पूसा चना 4037 अश्विनी किस्म का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह रोग प्रति. रोधक होने के कारण रासायनिक दवाइयों की आवश्यकता को कम कर देती है, जिससे किसानों को खेती की लागत कम पड़ती है। इसके साथ ही मशीन से कटाई की सुविधा और अधिक उत्पादन क्षमता इसे एक लाभकारी किस्म बनाती है। भविष्य में यह किस्म चना उत्पादकों के लिए एक बेहतर विकल्प बन सकती है और उनके जीवन स्तर को सुधा. रने में अहम भूमिका निभा सकती है।

मल्टी लेयर फार्मिंग: एक आधुनिक और लाभकारी खेती प्रणाली

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहां अधिकांश जनसंख्या खेती पर निर्भर है। खेती में तकनीकी बदलाव और परंप. रागत विधियों का मिश्रण अब किसानों के लिए आय बढ़ाने का साधन बन चुका है। इसी कड़ी में मल्टी लेयर फार्मिंग एक प्रभावी और टिकाऊ खेती प्रणाली के रूप में उभर रही है। यह विधि एक ही खेत में एक साथ कई फसलों को अलग–अलग ऊंचाई पर उगाने की अनुमति देती है। इस लेख में हम मल्टी लेयर फार्मिंग का महत्व, लाभ, कार्यप्रणाली, उपयुक्त फसलें, वेजिटेबल फार्मिंग मॉडल और इससे जुड़े सामान्य पहलुओं की जानकारी प्राप्त करेंगे।

मल्टी लेयर फार्मिंग क्या है?

मल्टी लेयर फार्मिंग की शुरुआत यूरोप से हुई और अब यह एक प्रगतिशील कृषि तकनीक बन चुकी है। इसमें किसान एक ही समय पर एक ही खेत में विभिन्न स्तरों (लेयर) पर फसलें उगाते हैं, जिससे भूमि का अधिकतम उपयोग होता है। यह तरीका सुरक्षित, स्थायी और लाभदायक है, जो उत्पादन और आय दोनों बढ़ाने में मदद करता है।

मल्टी लेयर फार्मिंग शुरू करने के मुख्य चरण

1. खेत का चयन और तैयारी

ऐसे खेत का चयन करें जहां पानी निकासी अच्छी हो और पर्याप्त धूप मिलती हो। गहरी जुताई करें और जैविक खाद जैसे गोबर, वर्मी कम्पोस्ट या कम्पोस्ट मिलाएं। मिट्टी की जांच कर पोषक तत्वों के अनुसार उर्वरक डालें।

2. बीजों का चयन और उपचार

एक साथ उगाई जा सकने वाली फसलों का चुनाव करें। जैसे – नीचे हल्दीध्अदरक, बीच में टमाटरध्बैंगन, ऊपर मक्काधमिर्च, और सबसे ऊपर बेल वाली फसलें जैसे लौकी, करेला आदि। बीजों को जैविक तरीके से उपचारित करें ताकि बीमारियों से बचाव हो।

3. बुवाई और रोपाई

सभी फसलों की बुवाई उनके स्थान और जरूरत के अनुसार करें। ऊंची फसलें कोनों या पीछे की ओर लगाएं ताकि अन्य पौधों को पर्याप्त धूप मिल सके। बेल वाली फसलों को सहारा देना जरूरी है।

4. सिंचाई प्रबंधन

मल्टी लेयर सिस्टम में ड्रिप या स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली सबसे बेहतर रहती है। इससे सभी फसलों को उचित मात्रा में पानी मिलता है और पानी की भी बचत होती है।

5. खरपतवार नियंत्रण

समय–समय पर निराई–गुड़ाई करें। मल्चिंग के प्रयोग से खरपतवार कम होते हैं और मिट्टी की नमी भी बनी रहती है।

6. रोग व कीट नियंत्रण

जैविक कीटनाशकों जैसे नीम का अर्क, लहसुन–अदरक का घोल उपयोग करें। फसलों की नियमित निगरानी जरूरी है ताकि समय पर उपचार हो सके।

7. कटाई और तुड़ाई

हर लेयर की फसल अपने समय पर तैयार होती है। जैसे ही कोई फसल पक जाए, उसे तुरंत काट लें ताकि अन्य फसलों को पर्याप्त पोषक तत्व मिल सकें।

मल्टी लेयर फार्मिंग में उपयुक्त फसलों का चयन

फसल चयन इस प्रणाली की सफलता की कुंजी है। नीचे एक चार–स्तरीय प्रणाली का उदाहरण दिया गया है:

1. पहली लेयर (भूमिगत फसलें)

- **स्थान:** मिट्टी के अंदर
- **फसलें:** हल्दी, अदरक, गाजर, मूली, शकरकंद, मूंगफली
- **विशेषता:** भूमि के भीतर विकास, ऊपरी फसलों से कोई टकराव नहीं।

2. दूसरी लेयर (नीची सब्जियां)

- **स्थान:** भूमि की सतह पर
- **फसलें:** पालक, धनिया, मेथी, भिंडी, बैंगन, टमाटर
- **विशेषता:** मध्यम ऊंचाई, सीधी धूप की आवश्यकता होती है।

3. तीसरी लेयर (मध्यम ऊंचाई वाले फलदार पौधे)

- **स्थान:** दूसरी लेयर के ऊपर
- **फसलें:** पपीता, केला, अमरूद, नींबू
- **विशेषता:** लम्बी अवधि में आय देने वाले, नीचे की फसलों को छांव मिलती है।

4. चौथी लेयर (बेल वाली फसलें)

- **स्थान:** सबसे ऊपरी परत, मचान या जाल पर
- **फसलें:** लौकी, करेला, खीरा, ककड़ी, तोरई
- विशेषता: ऊपर फैलने वाली फसलें, जमीन नहीं घेरतीं और अतिरिक्त आय देती हैं।

महत्वपूर्ण सुझाव

- फसलें ऐसी चुनें जिनकी जड़ें एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा न करें।
- ऊंची फसलें पूर्व–पश्चिम दिशा में लगाएं ताकि नीचे की फसलों को भरपूर धूप मिले।
- बेल वाली फसलों को मजबूत सहारा अवश्य दें।
- पूरे वर्ष नियमित रूप से आय पाने के लिए फसलों की योजना बनाएं।

खरीफ के मौसम में इन बाजरा किस्मों की खेती कर कमाएं शानदार मुनाफा

किसान भाइयों, विपरीत मौसम, कम वर्षा और न्यून उर्वरक उपयोग के बावजूद भी बाजरे की फसल अच्छा उत्पादन देती है। बाजरा गरीबों के लिए पोषण का एक प्रमुख स्रोत है, जिसमें प्रचुर मात्रा में ऊर्जा, प्रोटीन, विटामिन और खनिज तत्व पाए जाते हैं। बाजरे की खेती शुष्क और अर्द्ध–शुष्क क्षेत्रों में मुख्य रूप से की जाती है और यह अनाज और चारे दोनों का प्रमुख स्रोत है। यह फसल लगभग सभी प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती है और इसकी खेती का समय भी केवल 2 से 3 महीने का होता है। जहां वार्षिक वर्षा 500–600 मिमी होती है, वहां बाजरा की खेती अत्यंत लाभकारी मानी जाती है, खासकर देश के पश्चिमी और उत्तरी शुष्क क्षेत्रों में। अगर आप सही किस्मों का चयन करें तो बाजरा खेती से अच्छी पैदावार और मुनाफा संभव है। आइए जानते हैं कुछ प्रमुख उच्च उपज देने वाली बाजरे की किस्मों के बारे में:

बाजरे की अधिक उपज देने वाली किस्में:

बाजरे की अधिक उपज प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों का उपयोग करना बहुत आवश्यक है बाजरे की उन्नत किस्मे निम्नलिखित दी गयी हैं –

1. एचएचबी 67

एचएचबी 67 बाजरा की सबसे जल्दी पकने वाली और उच्च पैदावार देने वाली किस्मों में से एक है। यह किस्म मात्र 62–65 दिनों में तैयार हो जाती है और पौधे की ऊंचाई 160–180 सेंटीमीटर तक होती है। इससे प्रति हेक्टेयर 22–22 क्विंटल दाने और अच्छा चारा उत्पादन भी होता है।

2. आरएचबी 121

राजस्थान में लोकप्रिय यह किस्म कई रोगों के प्रति प्रतिरोधी है और 75–78 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी औसत दाना उपज 22–25 क्विंटल और चारे की उपज 25–30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

3. राज 171

मध्यप्रदेश में प्रमुख रूप से उगाई जाने वाली राज 171 किस्म 85 दिनों में पकती है। पौधों की ऊंचाई 170–200 सेंटीमी. टर तक होती है और इससे 20–25 क्विंटल अनाज तथा 45–48 क्विंटल चारा प्रति हेक्टेयर प्राप्त किया जा सकता है।

4. पूसा 605

यह किस्म भी राजस्थान के किसानों द्वारा बहुत पसंद की जाती है। 75–80 दिनों में तैयार होने वाली इस किस्म की ऊंचाई 125–150 सेंटीमीटर होती है। इससे 15–20 क्विंटल दाना और 25 क्विंटल चारा प्रति हेक्टेयर मिलता है।

5. पूसा 23 (हाइब्रिड बाजरा)

पूसा 23 किस्म 85–90 दिनों में पककर तैयार हो जाती है और यह विशेष रूप से जोगिया रोग के प्रतिरोध में श्रेष्ठ मानी जाती है। कम पानी की आवश्यकता और वर्षा आधारित खेती के लिए यह किस्म आदर्श है।

बाजरा की खेती से जुड़े अतिरिक्त सुझाव

अगर आप कम समय में अधिक मुनाफा कमाना चाहते हैं तो बाजरा की इन उन्नत किस्मों का चयन करें। बुवाई के समय उचित बीज उपचार करें और पोषक तत्वों का सही प्रबंधन करें ताकि उपज में वृद्धि हो सके। बाजार मांग के अनुसार यदि सही समय पर फसल कटाई की जाए तो बाजरा की कीमत भी अच्छी मिलती है। साथ ही, बाजरा जैविक खेती के लिए भी उपयुक्त है, जिससे जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग का लाभ उठाया जा सकता है।जून–जुलाई के महीने में बाजरा की उपयुक्त किस्मों का चयन कर खेती करने से किसान भाइयों को कम लागत में अच्छी आमदनी प्राप्त हो सकती है। बाजरा पोषण से भरपूर और जलवायु सहनशील फसल है, इसलिए आने वाले समय में इसकी खेती ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में अहम भूमिका निभा सकती है।

SONALIKA
HEAVY DUTY TRACTOR RANGE
SONALIKA SIKANDER
DI 35
शक्तिशाली इंजन
अद्भुत प्रदर्शन
दमदार HDM इंजन
2780 cc | टॉर्क 167 Nm
34.07km/h*
TOP SPEED
हाई स्पीड
2000 kg*
ExSo सेन्सिंग
हाइड्रोलिक
DI-35
SONALIKA
HDM

देशी कपास की उन्नत किस्में

कपास एक प्रमुख रेशा फसल है। कपास सफेद सोने के नाम से मशहूर है। इसके अंदर नैचुरल फाइबर विघमान रहता है, जिसके सहयोग से कपड़े बनाए जाते हैं। भारत के कई इलाकों में कपास की खेती काफी बड़े स्तर पर की जाती है। इसकी खेती देश के सिंचित और असिंचित इलाकों में की जा सकती है। इस लेख में हम आपको कपास की खेती की संपूर्ण जानकारी देने वाले हैं, भारत में कपास की दो किस्मों की खेती की जाती है देशी कपास और अमेरिकन कपास। देशी कपास की खेती भारत में कई स्थानों पर की जाती है, भारत में इसकी कई किस्में मौजूद है। इस लेख में हम आपको देशी कपास की किस्मों के बारे में जानकारी देंगे।

1. उन्नत किस्में (Advanced Varietiè):

- HD 107: देशी कपास की ये किस्म हिसार में विकसित की गयी, ये कपास की रोग प्रतिरोधी किस्म है , इसका रेशा लंबाई भी काफी अच्छी, होती है देशी कपास की ये किस्म हरियाणा–पंजाब–राजस्थान के लिए उपयुक्त।
- HD 432: ये देशी कपास की सूखा सहनशील किस्म है, इसका मध्यम रेशा काफी अच्छा होता है, उत्तरी भारत के शुष्क क्षेत्रों हेतु ये किस्म उपयुक्त है।
- RG 18: उड़ीसा व आंध्रप्रदेश के लिए ये किस्म तैयार की गयी है साथी ही यह किस्म रोगरोधी और अच्छी गुणवत्ता वाली है
- RG 8: दक्षिण भारत के लिए, उच्च उत्पादन और रोग प्रति. रोधक।
- DS 5: इस किस्म को कर्नाटक–महाराष्ट्र में उपयुक्त, कीट व रोग सहनशील माना जाता है ।
- LD 230, 327, 491: पंजाब में विकसित की गयी है, इस किस्म से अच्छी गुणवत्ता और उत्पादकता मिलती है।

2. प्रचलित किस्में (Popular Varieties):

- HD 123, HD 324: उत्तरी भारत के लिए, बेहतर उत्पादन व रेशा वाली किस्म है।
- RG 542: ये दक्षिण भारत में प्रचलित, सूखा सहनशील और अच्छा फाइबर देने वाली किस्म है।

3. संकर किस्में (Hybrid Varieties):

- AAH 1: देसी कपास का पहला संकर, उच्च उपज, बेहतर रेशा।
- राज DH 9: राजस्थान के लिए, रोगरोधी और अधिक उत्पादन।
- HHH 223, 287: हरियाणा हेतु, अच्छा फाइबर व उत्पादन।
- KR 64: कर्नाटक में विकसित, कीट प्रतिरोधी, उच्च उपज।
- CICR 2: नागपुर से विकसित, रोग सहनशील, संकर व अधिक उपज।

4.CICR Series (CICR 1, 2, 3):

- CICR 1: ये देशी कपास की सूखा सहनशील, लंबा रेशा वाली किस्म है।
- CICR 2: ये देशी कपास की संकर, अधिक उपज देने वाली किस्म है।
- CICR 3: ये किस्म भी रोग प्रतिरोधी, उच्च गुणवत्ता वाली है।

5 AAH&1 (हिसार):

- देसी कपास का पहला संकर, 20–22 क्विंटलध्हेक्टेयर उपज, गुलाबी सुंडी प्रतिरोधी, 150–160 दिन में तैयार।
- उपयुक्त क्षेत्र: हरियाणा, पंजाब, राजस्थान।

भारत में आम की किस्में

आम भारत की प्रमुख फल फसल है और इसे फलों का राजा माना जाता है। आम का उपयोग इसके विकास के सभी चरणों में किया जाता है कृ कच्चे और पके दोनों रूपों में। कच्चे आम का उपयोग चटनी, अचार और रस बनाने में होता है।पके आम न केवल सीधे खाने के लिए, बल्कि स्क्वैश, सिरप, नेक्टर, जैम और जेली जैसे कई उत्पादों के निर्माण में भी उपयोग किए जाते हैं। आम की गुठली में 8दृ10: तक उच्च गुणवत्ता वाला वसा होता है, जिसका उपयोग साबुन बनाने में और कोला के विकल्प के रूप में कन्फेक्शनरी में किया जा सकता है। आज के इस लेख में हम आपको आम की उन्नत किस्मों के बारे में जानकारी देंगे।

आम की उन्नत किस्में

आम की किस्मों की बाते करे तो भारत में लगभग 1000 किस्मों से भी अधिक आम किस्में पाई जाती हैं, यहां आप आम की कुछ खास किस्मों के बारे में जानेंगे जी को अधिक उपज देती हैं।

- मल्लिका – यह नीलम और दशहरी का संकर (हाइब्रिड) है। इसके फल मध्यम आकार के, कैडमियम रंग के और अच्छी गुणवत्ता वाले होते हैं। यह नियमित रूप से फल देने वाली किस्म मानी जाती है।
- अमरपाली – यह दशहरी और नीलम का संकर है। यह एक बौनी और जोरदार बढ़ने वाली किस्म है, जो नियमित और देर से फल देती है। इसकी औसत उपज 16 टन प्रति हेक्टेयर होती है और एक हेक्टेयर में लगभग 1600 पौधे लगाए जा सकते हैं।
- मंजीरा – यह रमानी और नीलम का संकर है। यह अर्ध–बौनी और नियमित रूप से फल देने वाली किस्म है। फल मध्यम आकार के, हल्के पीले रंग के, गूदा रेशारहित, सख्त और स्वाद में मीठे होते हैं।
- रत्ना – यह नीलम और अल्फांसो का संकर है। यह नियमित फल देने वाली किस्म है और स्पंजी टिशू से मुक्त है। इसके फल मध्यम आकार के, उत्कृष्ट गुणवत्ता वाले होते हैं। गूदा गहरा नारंगी, रेशारहित और सख्त होता है तथा घुलनशील ठोस पदार्थ (TSS) 19–21 ब्रिक्स होता है।
- अर्का अरुणा – यह बंगनपल्ली और अल्फांसो का संकर है। यह नियमित फल देने वाली और बौनी किस्म है। प्रति हेक्टेयर लगभग 400 पौधे लगाए जा सकते हैं। इसके फल बड़े आकार

के (500–700 ग्राम), आकर्षक रंग वाले होते हैं। गूदा रेशारहित, मीठा (20–22 ब्रिक्स) और गूदे का प्रतिशत 73ः होता है। फल स्पंजी टिशू से मुक्त होते हैं।

- अर्का पुनीत – यह अल्फांसो और बंगनपल्ली का संकर है। यह नियमित और भारी उपज देने वाली किस्म है। फल मध्यम आकार (220–250 ग्राम), आकर्षक रंग और लाल आभा लिए होते हैं। गूदा रेशारहित, गूदे का प्रतिशत 70ः होता है। फल स्वाद में मीठे (20–22 ब्रिक्स), अच्छी भंडारण क्षमता वाले और प्रसंस्करण के लिए उपयुक्त होते हैं।
- अर्का अनमोल – यह अल्फांसो और जनार्दन पसंद का संकर है। यह अर्ध–बौना पौधा होता है और नियमित रूप से फल देता है। फल स्पंजी टिशू से मुक्त होते हैं और समान रूप से पीले रंग में पकते हैं। इसकी भंडारण क्षमता बहुत अच्छी होती है, जिससे यह निर्यात के लिए उपयुक्त है। इसमें शर्करा और अम्ल का संतुलन उत्कृष्ट होता है। औसतन फलों का वजन 300 ग्राम होता है और गूदा नारंगी रंग का होता है।

जिरेनियम की खेती के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

जिरेनियम एक सुगंधित पौधा है, जिससे निकलने वाला तेल इत्र, साबुन और कॉस्मेटिक उद्योगों में अत्यधिक प्रयोग किया जाता है। इसकी खुशबू गुलाब जैसी होती है, और यह अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी काफी लोकप्रिय है। भारत में जिरेनियम तेल की कीमत लगभग ₹20,000 प्रति लीटर तक है, लेकिन घरेलू उत्पादन बेहद कम हैकृसिर्फ 2 टन। वहीं, देश को 20 टन तेल आयात करना पड़ता है। ऐसे में जिरेनियम की खेती किसानों के लिए एक लाभदायक व्यवसाय बन सकती है।

कम निवेश, ज्यादा मुनाफा

जिरेनियम की खेती में लागत कम होती है, क्योंकि इसे बहुत ज्यादा सिंचाई या रासायनिक खाद की आवश्यकता नहीं होती। यह सूखा सहन कर सकने वाली फसल है, जिससे छोटे और सीमांत किसान भी इससे अच्छा लाभ कमा सकते हैं। यदि आधुनिक खेती तकनीकों और समय पर प्रबंधन का पालन किया जाए, तो यह फसल ₹3 लाख तक का शुद्ध मुनाफा दे सकती है।

नर्सरी और रोपण का समय

सीमैप (लखनऊ) के अनुसार, अक्टूबर में नर्सरी तैयार की जाती है और पौधों की रोपाई नवंबर से फरवरी तक की जाती है। एक एकड़ जमीन पर लगभग 20,000–22,000 पौधे लगाए जाते हैं, जिनके बीच की दूरी 30 से 45 सेंटीमीटर होती है।

खेती की विधि और देखभाल

खेत की अच्छी तरह जुताई करके मिट्टी को भुरभुरा बनाया जाता है। पानी की निकासी का समुचित प्रबंध बेहद आवश्यक है। रोपाई के बाद कटिंग्स को नियमित देखभाल की जरूरत होती है।

खाद और सिंचाई प्रबंधन

प्रति हेक्टेयर लगभग 300 क्विंटल गोबर की खाद का उपयोग लाभदायक होता है। इसके साथ नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश का संतुलित अनुपात में प्रयोग आवश्यक है। विशेष ध्यान देना चाहिए कि जिरेनियम को अत्यधिक पानी की जरूरत नहीं होतीकृअधिक सिंचाई से जड़ें सड़ सकती हैं।

फसल कटाई और तेल उत्पादन

फसल की कटाई 3–4 महीनों में तब की जाती है जब पत्तियां पूरी तरह परिपक्व हो जाएं। पत्तियों का रंग न ज्यादा पीला होना चाहिए और न ही अधिक नमी से भरा हुआ। एक एकड़ से लगभग 50–60 लीटर तेल निकाला जा सकता है, जिससे लाखों की कमाई संभव है।

जिरेनियम की अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारी मांग है। अगर भारत में इसके उत्पादन को बढ़ाया जाए, तो यह न केवल किसानों की आमदनी में वृद्धि कर सकता है बल्कि आयात पर भी निर्भरता घटा सकता है। विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां सिंचाई की सुविधा सीमित है, जिरेनियम की खेती आदर्श विकल्प बन सकती है।

सोया साग की खेतीरू कम लागत में अधिक मुनाफा देने वाली फसल

आज के समय में किसानों के लिए मुनाफे वाली खेती की तलाश में सोया साग एक बेहतरीन विकल्प बनकर उभरा है। यह न केवल पोषण से भरपूर है, बल्कि इसकी बाजार में मांग भी निरंतर बनी रहती है। सोया साग में एंटी. ऑक्सीडेंट की भरपूर मात्रा होती है, साथ ही इसमें मैग्नीशियम, आयरन, पोटैशियम, फाइबर और प्रोटीन जैसे तत्व भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके सेवन से आंखों की रोशनी बढ़ती है, त्वचा में निखार आता है और यह हड्डियों को मजबूत करने में मददगार होता है। साथ ही, नींद की समस्याओं और श्वसन संबंधी विकारों में भी यह लाभकारी है। इसकी लगातार मांग के चलते किसान इससे अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

उपयुक्त जलवायु और मिट्टी

सोया साग की खेती के लिए शीतोष्ण जलवायु सबसे उपयुक्त मानी जाती है। यह फसल 15 से 25 डिग्री सेल्सियस तापमान पर अच्छी वृद्धि करती है। हल्की ठंड को यह सहन कर सकती है। मिट्टी की बात करें तो दोमट या रेतीली दोमट मिट्टी जिसमें पानी की निकासी अच्छी हो, सोया साग के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। मिट्टी का pH स्तर 6.0 से 7.5 के बीच होना चाहिए। हालांकि सोया साग के लिए कोई विशिष्ट किस्में नहीं होती, लेकिन सोयाबीन की कुछ किस्में जैसे पीबी–1, पीबी–2 और जेएस–335 उपयुक्त मानी जाती हैं। इन किस्मों से अच्छी गुणवत्ता वाला साग प्राप्त होता है।

खेत की तैयारी और बुवाई

खेत को 2–3 बार अच्छी तरह जुताई कर भुरभुरी मिट्टी तैयार की जाती है। समतल भूमि में सड़ी हुई •ोबर की खाद या कंपोस्ट मिलाना आवश्यक है। बुवाई करते समय बीजों को 5 सेमी •हराई पर बोया जाता है और पंक्तियों के बीच 25 से 30 सेमी की दूरी रखी जाती है। प्रति ,कड़ 8–10 किलो•ाम बीज की आवश्यकता होती है।

उर्वरक और खाद प्रबंधन

अच्छी उपज के लिए संतुलित पोषण जरूरी है। प्रति एकड़ 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 50 किलोग्राम फॉस्फोरस (प्रति हेक्टेयर) और 20 किलोग्राम पोटाश बुवाई के समय देना चाहिए। जैविक खाद के प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता भी बनी रहती है।

सिंचाई, खरपतवार और कीट नियंत्रण

फसल को 3 से 4 बार सिंचाई की आवश्यकता होती है, जो मौसम और मिट्टी की नमी पर निर्भर करती है। खरपतवार नियंत्रण के लिए प्रारंभिक जुताई और समय–समय पर हाथ से निराई करनी चाहिए। लीफ माइनर और तना छेदक जैसे कीटों के लिए जैविक या रासायनिक कीटनाशकों का संतुलित प्रयोग लाभकारी होता है।

रोग प्रबंधन और उत्पादन

फसल में फ्यूजेरियम विल्ट और डाउनी मिल्ड्यू जैसे रोगों की आशंका रहती है। इनसे बचाव के लिए बीजों की उपचारित बुवाई और फफूंदनाशकों का प्रयोग करें। कटाई बुवाई के 30–40 दिनों बाद शुरू होती है और यह एक से अधिक बार काटी जा सकती है। प्रति हेक्टेयर लगभग 15 क्विंटल साग की उपज प्राप्त होती है।

निष्कर्षः

कम लागत, कम समय में तैयार होने और पोषण से भरपूर होने के कारण सोया साग की खेती किसानों के लिए एक उत्तम विकल्प है। यदि उचित तकनीक और देखभाल के साथ खेती की जाए तो यह फसल सालभर आय का सशक्त स्रोत बन सकती है।

भिंडी के रोग – रोगों के नाम, लक्षण और नियंत्रण के उपाय

भिंडी की खेती भारत में एक महत्वपूर्ण कृषि व्यवसाय है, जिसे विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर किया जाता है। मुख्य रूप से इसे खरीफ के मौसम में उगाया जाता है। इस फसल की अच्छी पैदावार के लिए उपजाऊ मिट्टी, उपयुक्त मौसम और अनुकूल प्राकृतिक परिस्थितियाँ आवश्यक होती हैं। भिंडी उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में सफलताप. ूर्वक उगाई जा सकती है। भंडी की बुवाई आमतौर पर मार्च से जून के बीच होती है और फसल जुलाई से सितंबर तक पककर तैयार हो जाती है।

भिंडी की खेती में प्रमुख रोग और उनके नियंत्रण उपाय

1. डैम्पिंग ऑफ (Damping Off)

यह रोग बीज बोने के तुरंत बाद दिखाई देता है। ठंडा और नम मौसम, भारी मिट्टी, अधिक नमी और अत्यधिक भीड़ इस रोग को बढ़ावा देते हैं। इस रोग में बीज अंकुरित नहीं होते या अंकुर निकलने के बाद मर जाते हैं। रोगग्रस्त तनों पर मिट्टी की सतह के पास घाव बनते हैं जिससे पौधे गिर जाते हैं।

नियंत्रण उपाय:

- अत्यधिक सिंचाई से बचें।
- बीजोपचार करें: ट्राइकोडर्मा विराइड (3–4 ग्रामधकिलो बीज) या थीरम (2–3 ग्रामधकिलो बीज) का उपयोग करें।
- मिट्टी को डाइथेन एम–45 (0.2%) याबाविस्टिन (0.1%) से उपचारित करें।

नियमित निरीक्षण करें और प्रभावित पौधों को नष्ट करें।

- नियमित निरीक्षण करें और प्रभावित पौधों को नष्ट करें।

2. येलो वेन मोजेक वायरस (Yellow Vein Mosaic Virù)

इस रोग में पत्तियों की नसें पीली और मोटी हो जाती हैं। गंभीर मामलों में पत्तियाँ पीली, छोटी हो जाती हैं और पौधा बौना रह जाता है। फल छोटे, विकृत और कम मूल्य के होते हैं।

नियंत्रण उपाय:

- 5% नीम बीज गिरी अर्क या अदरक–लहसुन–मिर्च अर्क का छिड़काव करें।
- खरपतवार और जंगली मेजबानों को नष्ट करें।
- संक्रमित पौधों को हटाकर जला दें।
- गर्मी में रोपण से बचें।
- रोग–प्रतिरोधी किस्में लगाएँ जैसे परभणी क्रांति, अर्का अनामिका, वीआरओ–5, वीआरओ–6।

3. फ्यूजेरियम विल्ट (Fusarium Wilt)

यह रोग पौधों को मुरझा देता है, जो शुरुआत में अस्थ. ायी होता है पर बाद में स्थायी हो जाता है। पत्तियाँ पीली होकर गिरने लगती हैं और अंततः पौधा सूख जाता है।

नियंत्रण उपाय:

- 10 दिन के अंतराल पर डाइमेथोएट (0.05%) या ऑक्सीडेमेटन मिथाइल (0.02%) का छिड़काव करें। खनिज तेल (2%) का भी उपयोग करें।

- खनिज तेल (2%) का भी उपयोग करें।
- बुवाई के समय कार्बोफ्यूरान 1 किलो/हेक्टेयर की दर से मिलाएँ।
- प्रतिरोधी किस्मों जैसे अर्का अनामिका व अर्का अभय का उपयोग करें।

4. पाउडरी मिल्ड्यू (Powdery Mildew)

यह रोग विशेष रूप से पुरानी पत्तियों और तनों पर सफेद चूर्ण जैसे धब्बों के रूप में दिखता है। पत्तियों के झड़ने के कारण उपज में गिरावट आती है। आर्द्रता और भारी ओस इसके प्रसार को बढ़ावा देती हैं।

नियंत्रण उपाय:

अकार्बनिक सल्फर (0.25%) या डिनोकैप (0.1%) का 15 दिनों के अंतराल पर 3–4 बार छिड़काव करें।

भारत में 50 HP श्रेणी में आने वाले टॉप 7 ट्रैक्टर मॉडल

भारत में 50 हॉर्सपावर (HP) इंजन वाले ट्रैक्टरों की मांग तेजी से बढ़ रही है। ये ट्रैक्टर न केवल खेती के विभिन्न कार्यों को सुगमता से पूरा करते हैं, बल्कि बेहतर तकनीक और उच्च प्रदर्शन क्षमता के चलते किसानों की उत्पाद. कता भी दोगुनी कर देते हैं। चाहे मौसम कैसा भी हो, ये शक्तिशाली ट्रैक्टर हर परिस्थिति में बेहतरीन परिणाम देते हैं। यदि आप 50 HP ट्रैक्टर खरीदने का विचार कर रहे हैं, तो यहां हम आपके लिए 7 बेहतरीन मॉडलों की सूची उनके फीचर्स और कीमत के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं:

भारत में लोकप्रिय 7 बेहतरीन मॉडल्स की सूची

1- Sonalika 745 DI III Sikander

Sonalika 745 DI III सिकंदर 50 HP श्रेणी का एक भरोसेमंद ट्रैक्टर है। यह 3 सिलेंडर और 3067CC के दमदार इंजन के साथ आता है, जो 1900 RPM उत्पन्न करता है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर विकल्प मिलते हैं, साथ ही ड्राई डिस्क या ऑइल इमर्स्ड ब्रेक का विकल्प भी मिलता है। इसकी हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता 2000 किलोग्राम है। इसकी कीमत 7.30 लाख से 7.90 लाख रुपये के बीच है।

2- Mahindra 585 DI XP Plus

यह महिंद्रा का एक शक्तिशाली मॉडल है, जो उन्नत तकनीक, उच्च ईंधन दक्षता और बेहतर प्रदर्शन के साथ आता है। इसमें 3054CC क्षमता वाला 4 सिलेंडर इंजन है जो 2100 RPM प्रदान करता है। ट्रैक्टर 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर के साथ आता है। इसमें ड्राई डिस्क और ऑइल इमर्स्ड ब्रेक का विकल्प, और पावर स्टीयरिंग भी उपलब्ध है। इसकी कीमत 6.90 लाख से 7.80 लाख रुपये तक है।

3- Powertrac Euro 50

पॉवरट्रैक यूरो 50 किसानों के बीच अपनी बेहतरीन ईंधन दक्षता और कम मेंटेनेंस के कारण लोकप्रिय है। इसमें 2761CC क्षमता वाला 3 सिलेंडर इंजन है, जो 2200 RPM तक ऊर्जा उत्पन्न करता है। 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर, ऑइल इमर्स्ड ब्रेक्स और बैलेंस्ड पावर स्टीयरिंग इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं। इसकी लिफ्टिंग क्षमता 2000 किलोग्राम और कीमत 8.50 लाख से 8.90 लाख रुपये तक है।

4- Eicher 5660

Eicher 5660 किसानों के बीच अपने मजबूत निर्माण और बेहतरीन माइलेज के लिए विख्यात है। इसमें 3300CC का 3 सिलेंडर इंजन है, जो 2150 RPM उत्पन्न करता है। यह ट्रैक्टर 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर विकल्पों के साथ आता है। ऑइल इमर्स्ड ब्रेक और पावर स्टीयरिंग इसे और भी शानदार बनाते हैं। इसकी लिफ्टिंग क्षमता 2100 किलोग्राम है और कीमत लगभग 8.50 से 8.90 लाख रुपये के बीच है।

5- John Deere 5050 E

John Deere 5050 E एक भरोसेमंद मॉडल है जिसमें 2900CC क्षमता वाला 3 सिलेंडर इंजन लगा है, जो 2100 RPM उत्पन्न करता है। इसमें 9 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर दिए गए हैं। मल्टी प्लेट ऑइल इमर्स्ड ब्रेक्स और पावर स्टीयरिंग इस ट्रैक्टर की हैंडलिंग को आसान बनाते हैं। इसकी लिफ्टिंग क्षमता 1448 से 1600 किलोग्राम तक है और इसकी कीमत लगभग 8.40 लाख रुपये तक जाती है।

6- Swaraj 744 XT

Swaraj 744 XT खेती में ताकत और विश्वसनीयता का पर्याय है। इसमें 3478CC का 3 सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो 2000 RPM उत्पन्न करता है। इस ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर मिलते हैं। ऑइल इमर्स्ड ब्रेक और पावर स्टीयरिंग इसके संचालन को काफी सरल बनाते हैं। इसकी लिफ्टिंग क्षमता 1700 किलोग्राम है और कीमत 7.45 लाख से 8.00 लाख रुपये के बीच है।

7- Indo Farm 3048 DI

Indo Farm 3048 DI अपनी मजबूत बनावट और बेहतरीन प्रदर्शन क्षमता के लिए जाना जाता है। इसमें 2856CC का 3 सिलेंडर इंजन है, जो 2200 RPM उत्पन्न करता है। 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर, ऑइल इमर्स्ड ब्रेक्स और पावर स्टीयरिंग के साथ यह ट्रैक्टर भारी कार्यों के लिए उपयुक्त है। इसकी लिफ्टिंग क्षमता 1800 किलोग्राम है और कीमत 7.45 लाख से 7.70 लाख रुपये तक है।

भारत में खेती को कुशल और लाभदायक बनाने के लिए 50 HP ट्रैक्टरों का चयन करना एक बेहतरीन निर्णय है। चाहे बात भारी जुताई की हो, या बागवानी और ट्रांसपोर्ट के कार्यों की — उपरोक्त सूची में दिए गए ट्रैक्टर उच्चतम प्रदर्शन, कम ईंधन खपत और टिकाऊपन के आदर्श उदाहरण हैं। अपनी आवश्यकताओं और बजट के अनुसार सही ट्रैक्टर चुनकर आप अपनी कृषि उत्पादकता को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं।

Mahindra Yuvo 575 DI VS John Deere 5045 D – कौन है बेहतर विकल्प? जानिए पूरी तुलना

किसान भाइयों, जैसा कि आप जानते हैं Mahindra और John Deere दोनों ही भारत की प्रतिष्ठित ट्रैक्टर निर्माता कंपनियाँ हैं।ये कंपनियाँ वर्षों से किसानों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बेहतरीन ट्रैक्टर उपलब्ध करवा रही हैं। इन दोनों ब्रांड्स के ट्रैक्टर खेतों में बेहतर प्रदर्शन देने के लिए जाने जाते हैं, साथ ही ये ईंधन की बचत भी करते हैं, जिससे किसानों को ज्यादा खर्च नहीं करना पड़ता। आज हम आपके लिए लेकर आए हैं Mahindra Yuvo 575 DI और John Deere 5045D

ट्रैक्टरों की तुलनात्मक समीक्षा, ताकि आप अपनी जरूरत के अनुसार सही ट्रैक्टर चुन सकें।

इंजन की ताकत और परफॉर्मेंस:

दोनों ही ट्रैक्टर दमदार इंजन के साथ आते हैं।

- John Deere 5045 D में 45 हॉर्सपावर का इंजन और 3 सिलेंडर मिलते हैं।
- Mahindra Yuvo 575 DI में 47 हॉर्सपावर का इंजन है, जो थोड़ी अधिक ताकत देता है और इसमें भी 3 सिलेंडर मौजूद हैं।

दोनों ट्रैक्टरों की इंजन रेटेड RPM 2100 है।

- John Deere में ड्राई टाइप ड्यूल एलिमेंट एयर फिल्टर होता है,
- जबकि Mahindra Yuvo 575 DI में ऑइल बाथ टाइप प्री–क्लीनर एयर फिल्टर दिया गया है।

PTO (पावर टेक ऑफ) की बात करें तो:

John Deere 5045 D देता है 38.2 HP पीटीओ पावर, जबकि Mahindra Yuvo 575 DI बनाता है 41.1 HP PTO पावर।

गियरबॉक्स और ब्रेक सिस्टम:

- Mahindra Yuvo 575 DI में 12 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर के साथ सिंक्रो शटल गियरबॉक्स मिलता है।
- वहीं John Deere 5045 D में 8 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर होते हैं।
- दोनों ही ट्रैक्टरों में मल्टी डिस्क ऑयल इम्मरसेड ब्रेक और पावर स्टीयरिंग दी गई है, जो ट्रैक्टर को अधिक नियंत्रण में रखते हैं।

टायर और वजन उठाने की क्षमता:

- दोनों ट्रैक्टरों के फ्रंट टायर समान हैं – 6.00 x16
- रियर टायर डीपदकतं में थोड़े बड़े हैं (14.9 x 28) जबकि John Deere में 13.6 x 28 हैं।
- वजन उठाने की क्षमता John Deere की ज्यादा है – 1600 किलोग्राम, जबकि Mahindra की 1500 किलोग्राम है।

कीमत में अंतर:

- John Deere 5045 D की कीमत लगभग ₹7.20 लाख से ₹7.89 लाख तक होती है।
- Mahindra Yuvo 575 DI की कीमत ₹8.19 लाख से ₹8.41 लाख के बीच है।

दोनों ट्रैक्टरों की कीमतें उनके फीचर्स और प्रदर्शन के अनुसार तय की गई हैं।

अगर आप थोड़ी ज्यादा ताकत और आधुनिक गियर विकल्प चाहते हैं तो Mahindra Yuvo 575 DI आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकता है। वहीं, अगर बजट थोड़ा कम है और विश्वसनीय परफॉर्मेंस चाहिए तो John Deere 5045 D एक ठोस विकल्प रहेगा।

खरपतवार नियंत्रण को आसान बनाते हैं ये आधुनिक कृषि यंत्र

खरपतवार फसलों के साथ पोषक तत्व, पानी, स्थान और सूर्य के प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिससे पैदावार में भारी गिरावट आ सकती है। इसी कारण खरपतवार नियंत्रण खेती का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। खेतों की निराई–गुड़ाई हाथ से या यंत्रों की सहायता से की जाती है। यदि समय रहते खरपतवारों पर नियंत्रण पा लिया जाए, तो फसल की गुणवत्ता, उपज, तथा उसमें मौजूद प्रोटीन और अन्य पोषक तत्वों की मात्रा में भी वृद्धि होती है। इस लेख में हम ऐसे आधुनिक यंत्रों की जानकारी साझा कर रहे हैं जो खरपतवार नियंत्रण को सरल और प्रभावी बना सकते हैं।

खरपतवार नियंत्रण के लिए आधुनिक कृषि यंत्र

निचे आपको सभी यंत्रो के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स निम्नलिखित दिए गए है –

1. स्वचालित रोटरी पावर वीडर

यह यंत्र डीजल इंजन से चलता है और ग्राउंड व्हील तक शक्ति वी–बेल्ट व पुली के माध्यम से पहुँचती है। गहराई को संतुलित बनाए रखने हेतु इसके पीछे एक पहिया होता है। इसमें लगे

अटैचमेंट घास व मिट्टी को मिलाकर खरपतवारों को खत्म करते हैं। घुमावदार ब्लेड वाली डिस्क 400 मिमी चौड़ाई तक काम कर सकती है और जरूरत के अनुसार गहराई में जाकर घास और मिट्टी को काटकर मिलाती है। इसका प्रयोग गन्ना, मक्का, कपास, टमाटर, बैंगन व दलहन जैसी पंक्तिबद्ध फसलों में किया जाता है।

2. कोनो वीडर

यह यंत्र विशेष रूप से पंक्तिबद्ध धान की खेती के लिए उपयुक्त है। इसमें त्रिशंकु आकृति वाले रोटर होते हैं जिनकी सतह पर दांतेदार स्ट्रिप्स लगे होते हैं। रोटर, फ्लोट और हैंडल एक फ्रेम से जुड़े होते हैं। फ्लोट मिट्टी में रोटर को धंसने से रोकता है और कार्य की गहराई को नियंत्रित करता है। रोटर मिट्टी की ऊपरी 3 सेमी परत में चलते हुए खरपतवार को जड़ से उखाड़ते हैं। इसकी संचालन क्षमता लगभग 0.18 हेक्टेयर प्रतिदिन है और इसे आसानी से उपयोग किया जा सकता है।

3. व्हील हैंड हो

यह उपकरण छोटे खेतों और बाग–बगिचों के लिए उपयुक्त है। इसमें एक या दो पहिए और एक हैंडल होता है जिससे किसान इसे हाथ से धकेल. कर चलाता है। ब्लेड की मदद से यह मिट्टी की ऊपरी परत को काटता है और खरपतवार हटाता है। यह यंत्र मध्यम कार्बन स्टील से बना होता है और उसकी कठोरता 40–45 एच.आर.सी. तक होती है।

4. ड्राईलैंड पेग वीडर

यह हस्तचालित यंत्र विशेष रूप से सूखी भूमि के लिए बनाया गया है। इसमें लोहे के रोलर पर दो डिस्क और ष्टष् आकार के ब्लेड लगे होते हैं, जो मिट्टी की कठोर परत को तोड़कर उसमें मौजूद खरपतवारों को हटाते हैं। इसका उपयोग सब्जियों, बागों और अंगूर की खेती में प्रभावी ढंग से किया जाता है। इसकी कार्य क्षमता लगभग 0.05 हेक्टेयर प्रतिदिन होती है।इन आधुनिक यंत्रों के उपयोग से खेतों में समय पर और प्रभावी तरीके से खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है। ये न सिर्फ किसानों का श्रम और समय बचाते हैं, बल्कि उत्पादन और गुणवत्ता बढ़ाकर लाभ में भी वृद्धि करते हैं।

Powertrac Euro 50 Plus Next और Powertrac Euro 50 Plus Powerhouse: किसानों के लिए भरोसेमंद और दमदार विकल्प

जब बात खेती–किसानी के लिए भरोसेमंद ट्रैक्टर की आती है, तो च्वूमतजतंब का नाम सबसे पहले लिया जाता है। यह कंपनी अपने ट्रैक्टरों की मजबूती, आधुनिक तकनीक और किसानों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाए गए मॉडलों के लिए जानी जाती है। इस लेख में हम पावरट्रैक के 50 एचपी सेगमेंट में आने वाले दो प्रमुख ट्रैक्टर – Powertrac Euro 50 Plus Next और Powertrac Euro 50 Plus Powerhouse – की विशेषताओं, तकनीकी विवरण और कीमत की तुलना करेंगे, जिससे किसान सही निर्णय ले सकें।

Powertrac Euro 50 Plus Next

Powertrac Euro 50 Plus Next एक अत्याधुनिक ट्रैक्टर है जो 55 HP क्षमता वाले इंजन के साथ आता है। इसका इंजन 2932 cc का है और इसमें 3 सिलेंडर लगे हुए हैं, जो शक्ति और इंधन दक्षता का संतुलन प्रदान करते हैं। यह ट्रैक्टर ड्यूल डायाफ्राम क्लच सिस्टम से लैस है, जिससे गियर बदलने में आसानी और बेहतर नियंत्रण मिलता है। इसमें 12 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर का विकल्प है, और ट्रांसमिशन सिस्टम पूरी तरह से कॉन्स्टेंट मेष टाइप है। इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 30.8 किमी/घंटा और रिवर्स स्पीड 11.3 किमीध्घंटा है। ब्रेकिंग सिस्टम तेल में डूबे हुए ब्रेक्स और मैकेनिकल पॉल रैचेट टाइप पार्किंग ब्रेक पर आधरित है, जो सुरक्षा और स्थायित्व प्रदान करता है। ट्रैक्टर में पावर

स्टीयरिंग दी गई है जिससे लंबे समय तक काम करने में कम थकावट होती है। पीटीओ 540 RPM की स्पीड पर काम करता है और इसमें 6–स्प्लाइन शाफ्ट के साथ MRPTO विकल्प भी दिया गया है, जो 1800 RPM पर बेहतर प्रदर्शन देता है। हाइड्रोलिक्स में SENSI&1 स्पजि तकनीक दी गई है और यह ट्रैक्टर 2000 किलोग्राम तक का वजन उठाने में सक्षम है। टायर साइज की बात करें तो फ्रंट टायर 7.5X16 और रियर टायर 16.9X28 के हैं। इसकी कीमत लगभग ₹7.25 से ₹8.00 लाख के बीच आती है।

Powertrac Euro 50 Plus Powerhouse

Powertrac Euro 50 Plus Powerhouse ट्रैक्टर 52 HP की श्रेणी में आता है और इसमें भी 3 सिलेंडर दिए गए हैं। इसका इंजन 2000 ERPM पर काम करता है, जो इसे स्थिर और प्रभावी बनाता है। इसका एयर क्लीनर ऑयल बाथ टाइप है, जो इंजन की लाइफ बढ़ाने में सहायक होता है। इसमें ब्वदेजंदज डमी ट्रांसमिशन और ड्यूल क्लच सिस्टम मिलता है। गियरबॉक्स साइड शिफ्ट टाइप है जो ऑपरेशन को और भी सरल बनाता है। यह ट्रैक्टर 37 किम. ीध्घंटा तक की फॉरवर्ड स्पीड देता है, जो इसे तेज गति में खेतों में काम करने के लिए उपयुक्त बनाता है। इसके हाईड्रॉलिक सिस्टम की लिफ्टिंग क्षमता भी 2000 किलोग्राम है और PTO पावर 45.6 HP है, जिससे यह ट्रैक्टर हैवी ड्यूटी उपकरणों को भी आसानी से चला सकता है। इसके फ्रंट टायर 7.5X16 और रियर टायर 14.9X28 साइज के हैं। इसकी कीमत ₹7.20 से ₹7.50 लाख के बीच है। दोनों ट्रैक्टर अपने–अप. ने सेगमेंट में बेहतरीन विकल्प हैं। यदि आपको थोड़ा ज्यादा इंजन पावर और बड़े रियर टायर की जरूरत है, तो Powertrac Euro 50 Plus Next आपके लिए उपयुक्त रहेगा। वहीं यदि आप बेहतर च्ज्व पावर और हाई स्पीड ट्रैक्टर की तलाश में हैं, तो च्वूमतजतंब म्नतव 50 च्सने च्वूमतीवनेम एक बेहतर चुनाव हो सकता है। दोनों ही ट्रैक्टर भारतीय किसानों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं और खेतों में कुशल प्रदर्शन करने में सक्षम हैं।

फोरेज हार्वेस्टररू क्या है और इसके उपयोग क्या हैं?

आज के दौर में कृषि में नई–नई तकनीकों और मशीनों का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है, जिससे किसानों का काम पहले की तुलना में काफी आसान हो गया है। खेती के हर क्षेत्र में अब मशीनें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, और यही बात चारा कटाई पर भी लागू होती है। पहले जहां श्रमिकों द्वारा चारा काटने और ढोने में काफी समय लगता था, वहीं अब यह काम मशीनों की मदद से कम समय और कम मेहनत में पूरा हो जाता है। इसी कड़ी में आज हम बात करेंगे फोरेज हार्वेस्टर मशीन की, जो चारा फसलों की कटाई के लिए अत्यंत उपयोगी है। इस लेख में आपको इस मशीन की उपयोगिता और फायदे की पूरी जानकारी मिलेगी, कृपया अंत तक पढ़ें।

फोरेज हार्वेस्टर क्या है?

फोरेज हार्वेस्टर एक विशेष कृषि यंत्र है, जिसका उपयोग हरे चारे और फसल अवशेषों को काटकर छोटे–छोटे टुकड़ों में करने के लिए किया जाता है। यह मशीन मुख्य रूप से पशुओं के लिए चारा तैयार करने में सहायक होती है। इसे घास, मक्का और अन्य चारा फसलों की कटाई के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

फोरेज हार्वेस्टर के उपयोग और लाभ

1. तेज और कुशल चारा कटाईरू

यह मशीन इंसानी मेहनत की तुलना में चारे को कहीं अधिक तेज और प्रभावी ढंग से काटती है, जिससे समय और श्रम दोनों की बचत होती है। साथ ही, यह हरे चारे को छोटे टुकड़ों में काट देती है, जिससे पशु आसानी से उसे खा सकते हैं और उनके दूध उत्पादन में भी सुधार होता है।

2. साइलेज उत्पादन में सहायक:
फोरेज हार्वेस्टर से तैयार किया गया चारा साइलेज बनाने के लिए आदर्श होता है। साइलेज एक संरक्षित चारा होता है जो विशेष रूप से सर्दियों में उपयोगी होता है, जब हरा चारा उपलब्ध नहीं होता। इससे पशुओं को सालभर पोषण मिलता है।

3. फसल अवशेषों का प्रबंधन:
फसल कटाई के बाद बचे हुए अवशेषों को यह मशीन बारीक काट देती है, जिससे खेत की सफाई आसान होती है और अवशेषों को मिट्टी में मिलाकर खाद के रूप में उपयोग किया जा सकता है, जिससे भूमि की उर्वरता भी बढ़ती है।

4. अधिक उत्पादन:
इस मशीन से बड़ी मात्रा में खेत जल्दी काटा जा सकता है, जिससे फसल खराब होने से पहले उसकी कटाई संभव होती है। यह चारे की गुणवत्ता को भी बेहतर बनाती है, जिससे पशुओं को अधिक पौष्टिक आहार मिलता है।

5. सुविधा और बहुपरयोगिता:
फोरेज हार्वेस्टर के उपयोग से श्रमिकों की आवश्यकता कम हो जाती है और काम तेजी से होता है। इसे विभिन्न प्रकार की फसलों के अनुसार समायोजित किया जा सकता है, जिससे यह एक बहुपयोगी उपकरण बन जाता है। फोरेज हार्वेस्टर आधुनिक कृषि का एक अत्यंत उपयोगी और लाभकारी उपकरण है। यह न केवल किसानों के समय और श्रम की बचत करता है, बल्कि मवेशियों के लिए उच्च गुणवत्ता का चारा भी उपलब्ध कराता है। इसके माध्यम से किसानों की उत्पादकता बढ़ती है और यह पशुपालन को भी लाभकारी बनाता है। अगर आप कृषि से जुड़ी ऐसी ही और जानकारी चाहते हैं तो मेरीखेती पर जाएं, जहां आपको ट्रैक्टरों, औजारों और अन्य कृषि उपकरणों से जुड़ी हर जानकारी – जैसे कीमतें, तुलना, फोटो, वीडियो और ब्लॉग – एक ही स्थान पर उपलब्ध होगी।

Standard DI&460: 60 HP श्रेणी में किसानों के लिए एक शक्तिशाली ट्रैक्टर

Standard DI&460 ट्रैक्टर एक मजबूत और बजट–अनुकूल विकल्प है जिसे विशेष रूप से खेती के कार्यों को आसान बनाने के उद्देश्य से डिजाइन किया गया है। इस ट्रैक्टर में अत्याधुनिक फीचर्स दिए गए हैं, जो इसे हर प्रकार के कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त बनाते हैं। इस लेख में हम आपको Standard DI&460 ट्रैक्टर से जुड़ी संपूर्ण जानकारी देंगे।

Standard DI&460 इंजन की शक्ति

Standard DI&460 में 60 हॉर्सपावर वाला दमदार इंजन दिया गया है। यह इंजन 4 सिलेंडर और वाटर–कूल्ड तकनीक के साथ आता है, जिससे लंबे समय तक चलाने पर भी यह अधिक गर्म नहीं होता। इसकी इंजन क्षमता 4085 सीसी है और यह 2100 RPM पर बेहतरीन प्रदर्शन देता है। ट्रैक्टर की पीटीओ पावर 55.02 HP है, जिससे विभिन्न कृषि उपकरणों को आसानी से चलाया जा सकता है।

Standard DI&460 मुख्य फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

- ड्यूल क्लच सिस्टम: जिससे गियर शिफ्ट करना आसान और स्मूद हो जाता है।
- पावर स्टीयरिंग: कम जगह में भी ट्रैक्टर को आसानी से मोड़ा जा सकता है।
- बेहतर ट्रांसमिशन: ट्रैक्टर को संतुलित बनाता है और खेत में जुताई जैसे कार्यों में मदद करता है।
- लिफ्टिंग कैपेसिटी: 1800 किलोग्राम तक भार उठाने की क्षमता, जिससे भारी उपकरणों से काम करना सरल होता है।

4x4
परफॉर्मेंस, प्रोडक्टिविटी
मिले MORE!
POWERTRAC
EURO
45
PLUS
4WD
35 kW
47 HP
वाटर सील्ड फ्रंट एक्सल । 8F+8R सिंक्रो शटल ट्रांसमिशन । सस्पेंडेड पेडल । इंडिपेंडेंट PTO

- टायर साइज: आगे के टायर 7.5X16 और पीछे के टायर 16.9X28 साइज के हैं, जो बेहतर ग्रिप और स्थिरता प्रदान करते हैं।
- ईंधन टैंक क्षमता: 63 लीटर का बड़ा फ्यूल टैंक लंबे समय तक बिना रुके काम करने में सक्षम बनाता है।

Standard DI&460 ट्रैक्टर की कीमत

इस ट्रैक्टर की कीमत ₹7.30 लाख से ₹7.65 लाख के बीच होती है। अलग–अलग राज्यों और डीलरशिप के अनुसार कीमतों में थोड़ा बहुत अंतर हो सकता है। यह कीमत किसानों की आवश्यकता और बजट को ध्यान में रखकर तय की गई है। Standard DI&460 ट्रैक्टर एक भरोसेमंद, दमदार और सुविधाजनक ट्रैक्टर है जो खेती के लगभग हर कार्य को सहजता से पूरा कर सकता है। यदि आप ट्रैक्टर, कृषि उपकरणों और उनकी कीमतों की और जानकारी चाहते हैं, तो उमतपीमजप प्लेटफॉर्म पर विजिट कर सकते हैं जहाँ आपको ट्रैक्टर तुलना, फोटो, वीडियो और अन्य अपडेट भी मिलेंगे।

ट्रैक्टर के टायरों में पानी भरने के फायदेरू जानिए पूरी जानकारी

खेती में ट्रैक्टर एक अहम भूमिका निभाता है, क्योंकि यह किसानों के समय और मेहनत को बचाते हुए खेती के कठिन कार्यों को सरल बना देता है। जैसे–जैसे कृषि तकनीकों में उन्नति हो रही है, वैसे–वैसे ट्रैक्टर और अन्य कृषि उपकरणों की क्षमता को भी बढ़ाया जा रहा है। आपने अक्सर देखा होगा कि खेत में काम शुरू करने से पहले ट्रैक्टर के टायरों में पानी डाला जाता है। इस प्रक्रिया को टायर बैलेस्टिंग कहा जाता है, जिसमें टायरों में 60 से 80 प्रतिशत तक पानी भरा जाता है।

ट्रैक्टर के टायरों में क्यों भरा जाता है पानी?

ट्रैक्टर के टायरों में पानी भरने का प्रमुख उद्देश्य उसका वजन बढ़ाना होता है। इससे ट्रैक्टर के टायर जमीन पर ज्यादा मजबूती से पकड़ बना पाते हैं। जब ट्रैक्टर से भारी काम करवाना होता हैकृजैसे खेत जोतना या बड़े औजार खींचनाकृतो टायरों में पानी भरकर उसे अधिक स्थिर और सक्षम बनाया जाता है।

एयर और वॉटर टाइप वॉल्व क्या होते हैं?

चाहे ट्यूब वाले टायर हों या ट्यूबलेस, दोनों में पानी भरा जा सकता है। इसके लिए खास तरह की एयर एंड वॉटर वॉल्व का उपयोग होता है। जब टायर में पानी भरा जाता है, तो एक अतिरिक्त वॉल्व के जरिए हवा को बाहर निकाला जाता है ताकि पानी ठीक से भर सके।

जलभराव वाले खेतों में भी मिलता है लाभ

पानी भरे या कीचड़युक्त खेतों में काम करते समय टायरों का फिसलना एक आम समस्या होती है। ऐसे में यदि टायरों में केवल हवा भरी हो तो वे सतह पर पकड़ नहीं बना पाते और फिसलने लगते हैं। लेकिन पानी भर देने से टायर भारी हो जाते हैं और सतह पर अच्छी पकड़ बनाते हैं, जिससे ट्रैक्टर बिना फंसे आसानी से खेत में काम कर सकता है।

अधिक कर्षण का लाभ

पानी भरने से टायरों का कर्षण यानी ट्रैक्शन बेहतर होता है। ट्रैक्शन सीधे तौर पर घर्षण और वजन पर निर्भर करता है। भारी टायर अधिक घर्षण उत्पन्न करते हैं, जिससे ट्रैक्टर कठिन सतहों पर भी प्रभावी ढंग से काम करता है। ट्रैक्टर के टायरों में पानी भरना एक व्यावहारिक उपाय है जिससे उसकी कार्यक्षमता, स्थिरता और फिसलन भरे क्षेत्रों में पकड़ बेहतर होती है। यह सरल तकनीक किसानों के लिए खेती के कई कार्यों को आसान बना देती है।

50 एचपी श्रेणी के 3 सर्वश्रेष्ठ ट्रैक्टर मॉडल जो करेंगे खेती के सभी कार्य आसान

भारत में 50 हॉर्स पावर इंजन वाले ट्रैक्टरों की मांग लगातार बढ़ी है। ये ट्रैक्टर आपकी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और कृषि उत्पादकता को तेजी से बढ़ाते हैं। ये शक्तिशाली ट्रैक्टर भी नवीनतम तकनीक प्रदान करते हैं, जो मौसम के बावजूद उच्च प्रदर्शन देती है। 50 HP ट्रैक्टरों की खोज करने वालों के लिए, नीचे 3 सर्वश्रेष्ठ ट्रैक्टरों की सूची दी गई है, प्रत्येक ट्रैक्टर की विशेषताओं और मूल्य कीमत के साथ।

50 एचपी श्रेणी के 3 सर्वश्रेष्ठ ट्रैक्टरों के सभी फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

इस श्रेणी के ट्रैक्टर खेती के सभी कार्य आसनी से कर सकते है जिससे की किसानों के समय और श्रम की बचत होती है इन सभी ट्रैक्टरों के फीचर्स निम्नलिखित दिए गए है –

1-Mahindra 585 DI XP Plus

Mahindra 585 DI XP Plus एक शक्तिशाली ट्रैक्टर है जिसमें उन्नत तकनीक, शक्तिशाली इंजन और काफी कम ईंधन खपत जैसे फीचर्स है। यह महिंद्रा 2X2 ट्रैक्टर स्मूथ कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन, उच्च–परिशुद्धता हाइड्रोलिक्स और उच्च गुणवत्ता वाले ब्रेकिंग सिस्टम से लैस है, जो कृषि कार्यों में बहुत कुशल है। Mahindra 585 DI में 4 सिलेंडर और 3054cc क्षमता वाला 50 HP इंजन 2100 ERPM उत्पन्न करता है। इसमें

8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर हैं। यह दो विकल्पों के साथ आता है, ड्राई डिस्क और तेल में डूबे हुए ब्रेक। इसमें वैकल्पिक मैनुअल स्टीयरिंग के साथ पावर स्टीयरिंग है। इसका वजन 1620 किलोग्राम है और Lifting Capacity 1800 किलोग्राम है। Mahindra 585 DI XP PLUS की कीमत की बात करे तो इस ट्रैक्टर की कीमत 6.90 से 7.80 तक है।

2-Swaraj 744 XT

स्वराज ट्रैक्टर 744 XT शक्तिशाली ट्रैक्टर है और खेती के दौरान किसी भी चुनौती को आसानी से पार करने के लिए बनाया गया है। यह अद्वितीय सुविधा देता है और इसकी नवीन सुविधाएँ और नवाचार खेती को आसान बनाते हैं। भारतीय किसान इस ट्रैक्टर को अपने उच्च प्रदर्शन वाले इंजन, इनलाइन ईंधन इंजेक्शन पंप, आंशिक स्थिर जाल ट्रांसमिशन और कम रखरखाव लागत के कारण बहुत पसंद करते है। यह 50 एचपी इंजन द्वारा संचालित है जिसमें 3 सिलेंडर हैं। इंजन की क्षमता 3478cc है, जो 2000 ERPM जेनरेट कर सकता है।

इस ट्रैक्टर में आपको 8 forward और 2 reverse fगयर्स मिल जाते है। ट्रैक्टर को नियंत्रित करने के लिए इसमें oil & immersed brakes है और power steering आपको मिलता है। इस ट्रैक्टर की Lifting Capacity 1700 kg है। Swaraj 744 XT की कीमत 7.45 से 8.00 लाख रूपए तक है।

3- Powertrac Euro 50

ईंधन दक्षता और विश्वसनीयता के लिए प्रसिद्ध ट्रैक्टर ब्रांड एस्कॉर्ट्स कुबोटा का यह मॉडल किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है। पूरे भारत में किसानों ने पॉवरट्रैक यूरो 50 को उच्च उत्पादकता दरों, कम रखरखाव खर्चों और सेवा केंद्रों की आसानी के लिए चुना है। यह कृषि कार्यान्वयन के लिए भी सर्वश्रेष्ठ ट्रैक्टरों में से एक है। 50 एचपी इंजन में 3 सिलेंडर होते हैं। साथ ही 2761CC की क्षमता वाला इंजन 2200 ERPM जेनरेट कर सकता है।

इसमें 8 forward and 2 reverse gears आपको मिलते है। ट्रैक्टर को नियंत्रित करने के लिए इसमें oil&immersed brakes है और balanced power steering आपको मिलता है। इस ट्रैक्टर की स्पजिपदह ब्ंचंबपजल 2000 kg है। Powertrac Euro 50 की कीमत 8.50 से 8.90 लाख रूपए तक है।

निष्कर्ष

भारत में कृषि करने के लिए 50 एचपी श्रेणी के ट्रैक्टर किसानों के लिए बहुत महत्व रखते हैं। इन ट्रैक्टरों का निर्माण खेती के सभी कार्य आसन बनने के लिए किया गया ताकि किसान इन ट्रैक्टरों से सभी कृषि उपकरणों को कीच सकें और खेती के सभी कार्य आसानी से कर सकें।

इन ट्रैक्टरों के उपयोग से खेती के उतप्दान में वृद्धि होगी। किसानों के लिए इसलिए 50 एचपी श्रेणी के ट्रैक्टर बहुत आवश्यक हैं।

किलनी, जूँ और चिचड़ की समस्या और इससे निजात पाने के घरेलू उपाय

पशुपालकों को कभी ना कभी अपने पशुओं में किलनी, जूँ और चिचड़ जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पशुओं में विभिन्न प्रकार के रोग तो आमतौर पर पहचान में आ जाते हैं। परंतु, यदि पशु के शरीर में जूँ, चिचड़, किलनी आदि लग जाए तो ऐसी हालत में पशुपालकों को आसानी से पता नहीं चल पाता है। पशुओं के शरीर पर लगी यह जूं, चिचड़ी लगातार उनका खून चूसती रहती हैं। इसके चलते पशु काफी तनाव में रहने लगता है और काफी कमजोर भी हो जाता है। इसके अतिरिक्त पशु के शरीर से बाल झड़ने शुरू हो जाते हैं और बहुत बार पशु के बच्चों की जान तक चली जाती है।

किलनी, जूँ और चिचड़ हटाने के निम्नलिखित घरेलू उपाय

पशुओं के शरीर का स्वस्थ रहना पशुपालकों के लिए अत्यंत आवश्यक है। परंतु, यदि पशुओं को चिचड़, किलनी, और जूँ की दिक्कत हो जाए, तो इन्हें इस स्थिति से निकालने के केवल दो ही मार्ग होते हैं। पहला तो डॉक्टर से संपर्क करके दवा और इलाज की प्रक्रिया का पालन करना। दूसरा कुछ घरेलू उपायों को अपनाकर इनसे पशुओं का बचाव करना। चलिए आगे हम आपको बताएंगे कुछ घरेलू उपायों के विषय में।

1. खाद्य तेल का उपयोग

गाय या भैंस को चिचड़ी, जूँ या किलनी जैसे कीड़ों की दिक्कत से संरक्षित करने के लिए अलसी का तेल इस्तेमाल में लिया जा सकता है। आप अलसी के तेल के लेप मवेशी को लगा सकते हैं। इसके अतिरिक्त पशुपालक विभिन्न प्रकार के अन्य खाद्य तेल भी उपयोग कर सकते हैं।

2. साबुन का घोल

पशुओं को यह परेशानी सामान्यतः गंदगी की वजह से होती है। ऐसी स्थिति में यदि पशुपालक उनकी साफ दृ सफाई का ख्याल रखें तो इससे पशुओं को चिचड़ी और जूँ इत्यादि की समस्या नहीं होगी। इसके अतिरिक्त यदि पशु को यह समस्याएं हो गई हैं तो पशु को साबुन के गाढ़े घोल से नहला दिया जा सकता है। इस उपाय को पशुपालक एक हफ्ते में दो बार कर सकते हैं।

3. आयोडीन का उपयोग

समस्या से ग्रसित मवेशियों को इस समस्या के प्रकोप से बचाने के लिए पशुपालक आयोडीन का उपयोग भी कर सकते हैं। जूँ , चिचड़ को दूर भगाने के लिए गाय या पशु के शरीर पर सप्ताह में दो बार आयोडीन को जरूर रगड़ना चाहिए।

4. जूँ, चिचड़ के लिए लहसुन

लहसुन का इस्तेमाल भारत के तकरीबन हर घर में होता है। लेकिन, बहुत ही कम लोग जानते हैं कि लहसुन के अंदर विभिन्न ऐसे गुण विघमान होते जाते हैं, जो खतरनाक परजीवियों से राहत दिलाने के काम आ सकते हैं। जूँ और किलनी से छुटकारा पाने के

लिए पशुपालक लहुसन के पाउडर का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस पाउडर को पशु के शरीर पर सप्ताह में दो बार जरूर लगाना चाहिए। ऐसा करने से पशुओं को काफी हद तक जूँ और चिचड़ से छुटकारा मिल जाएगा।

5. एसेंशियल तेल

मानव संबंधी अनेक प्रकार की शारीरिक समस्याओं से निजात दिलाने में भी एसेंशियल या अस्थिर तेल का इस्तेमाल किया जाता हैं। परंतु, काफी कम पशुपालक यह जानते हैं, कि पशुओं पर भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। जूँ, चिचड़ और किलनी होने की स्थिति में एसेंशियल तेल का उपयोग अन्य खाद्य तेलों के साथ किया जाए, तो इससे पशुओं को इन कीड़ों से राहत मिल सकती है। इसलिए पशुपालकों को एसेंशियल तेल और खाद्य तेल को पशु के शरीर पर रगड़ना चाहिए।

6. कीटनाशक का उपयोग

जूँ, चिचड़ और किलनी से पशुओं को सहूलियत प्रदान करने के लिए पशुपालक पाइरिथ्रम नामक वानस्पतिक कीटनाशक इस्तेमाल कर सकते हैं।

7. चूना और सल्फर

गाय या भैंस को इन जीवों से निजात दिलाने के लिए पशुपालक चूने और सल्फर का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। जूँ, चिचड़ और किलनी से छुटकारा दिलाने के लिए चूना और सल्फर का घोल बनाना बेहद जरूरी होता है। इसे 7 से 10 दिन के समयांतराल में पशुओं को लगाना चाहिए। इस उपाय का इस्तेमाल कम से कम 6 बार करना पड़ेगा। ऐसा करने से पशु को इन जीवों से मुक्ति मिल सकती है।

8. आइवरमेक्टिन इंजेक्शन

पशुओं में किलनी की समस्या काफी ज्यादा देखी जाती है। ऐसी स्थिति में पशुपालक उन्हें आइवरमेक्टिन इंजेक्शन प्रदान कर सकते हैं। परंतु, ख्याल रहे कि यह इंजेक्शन पशुपालक डॉक्टर की सलाह पर ही दें। साथ ही, यदि पशु को इंजेक्शन दिया गया है, तो पशु के दूध का उपयोग कम से कम दो तीन सप्ताह तक न करें।

जूं, चिचड़ और किलनी की रोकथाम कैसे करें?

दरअसल, पशुपालकों की छोटी सी लापरवाही के चलते ही यह जीव उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसा तभी होता है, जब पशु के शेड में साफ सफाई नहीं की जाती और पशुओं के निवास स्थान पर गंदगी इकठ्ठा होने लगती है। इसके अलावा जब पशु की साफ सफाई पर ध्यान नहीं दिया जाता। नतीजतन, पशु इनकी चपेट में आ जाते हैं। इस स्थिति से पशुओं को सुरक्षित रखने के लिए पशुपालकों को साफ सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

चिचड़, जूँ और किलनी होने के प्रमुख लक्षण क्या हैं?

पशुओं के चिचड़, जूँ और किलनी से ग्रसित होने की स्थिति में मवेशी को निरंतर खुजली होती रहती है। गाय या भैंस के दूध देने की क्षमता में भी गिरावट आ जाती है। पशु को भूख लगनी कम हो जाती है, चमड़ी खराब होने लगती है, पशु के बाल झड़ने लगते हैं। गाय या अन्य पशु जब इनकी चपेट में आते हैं तो वह काफी ज्यादा तनाव में रहने लगते हैं।

गर्मी के मौसम में पशुधन की देखभाल के लिए कुछ सुझाव

जैसे ही गर्मी अपने चरम पर पहुंचती है, वैसे ही इंसानों के साथ–साथ पशुओं के लिए भी यह मौसम चुनौतीपूर्ण बन जाता है। लू और तापघात जैसी समस्याएं सिर्फ इंसानों तक सीमित नहीं होतीं, बल्कि पशुधन पर भी इसका सीधा प्रभाव पड़ता है। जैसे–जैसे पारा चढ़ेगा, वैसे–वैसे पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है, जिससे वे वायरल व बैक्टीरियल संक्रमण की चपेट में आ सकते हैं। खासकर दुधारू पशु अधिक प्रभावित होते हैं – वे दूध देना कम कर देते हैं और उनकी रोगों से लड़ने की ताकत भी घट जाती है।

गर्मियों में पशुओं की देखभाल के कुछ अनमोल उपाय:

- **छांव जरूरी है:** पशुओं को सीधी धूप से बचाकर छायादार शेड या पेड़ की छांव में रखें।
- **पानी है जीवन:** ठंडा, ताजा और साफ पानी दिन में कम से कम चार बार पिलाएं।
- **हरा चारा, स्वस्थ पाचन:** सूखे चारे के साथ हरे चारे की भी व्यवस्था करें ताकि पाचन संबंधी समस्याएं न हों।
- **आराम भी जरूरी है:** दोपहर की तीव्र गर्मी में भारवाहक पशुओं को विश्राम दें, उन्हें तब काम पर न लगाएं।
- **तापघात से बचाव:** लक्षण दिखें तो पशु को तुरंत छांव में लाएं, पूरे शरीर पर पानी डालें, सिर पर ठंडा गीला कपड़ा रखें और तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

पशु चिकित्सा विभाग की तैयारियां:

राजस्थान सरकार ने अपने सभी जिला पशु चिकित्सा अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे फील्ड में जाकर पशुपालकों को समय पर जानकारी दें। गांव–गांव जाकर जागरूकता अभियान चलाए जाएंगे, पोस्टर, पर्चे, मोबाइल संदेशों और रेडियो के माध्यम से जानकारी दी जाएगी। साथ ही, स्थानीय पशु चिकित्सालयों में विशेष व्यवस्था की जा रही है ताकि आपातकालीन स्थिति में तुरंत चिकित्सा सहायता उपलब्ध हो सके। यह भी सुनिश्चित किया जा रहा है कि किसी भी पशुपालक को जानकारी के अभाव में अपने पशुओं की जान न गंवानी पड़े।

सजग पशुपालक, स्वस्थ पशुधन:

सरकार की अपील है कि पशुपालक न केवल इन निर्देशों का पालन करें बल्कि अन्य लोगों को भी जागरूक करें। गर्मी का मौसम कठिन जरूर है, लेकिन थोड़ी समझदारी और सावधानी से पशुओं को इस तपती हुई चुनौती से बचाया जा सकता है। याद रखिए, स्वस्थ पशु न केवल दूध देते हैं, बल्कि एक स्वस्थ ग्रामीण अर्थव्यवस्था की नींव भी होते हैं। आइए, मिलकर अपने पशुधन को सुरक्षित और स्वस्थ बनाए रखें।

पडलिंग का मास्टर ब्लास्टर
श्रेष्ठ पडलिंग मास्टर
इसके विशेष डिज़ाइन से मिले गीली मिट्टी में भी बेहतरीन ग्रिप
JK TYRE
TOTAL CONTROL
*STANDARD
7
YEARS
WARRANTY
मज़बूत टाई-बार
बेहतर लग स्पेसिंग
और ज़्यादा गहरा ट्रेड
नई तकनीक से बना
Mud Shaker
SHRESTH
PUDDLING MASTER
JK TYRE
उपलब्ध साइज़:
13.6 - 28 I 14.9 - 28
#9.50 - 20 I 16.9 - 28
#Coming soon.
*T&C apply

डेयरी फार्मिंग से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी

डेयरी पालन छोटेध्सीमांत किसानों और कृषि मजदूरों के लिए सहायक आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। पशुओं से प्राप्त गोबर मिट्टी की उर्वरता और फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए एक अच्छा जैविक पदार्थ प्रदान करता है। गोबर गैस को घरेलू ईंधन के रूप में और कुओं से पानी निकालने के लिए इंजनों को चलाने के लिए भी प्रयोग किया जाता है। अतिरिक्त चारा और कृषि उप–उत्पादों का उपयोग पशुओं को खिलाने के लिए लाभप्रद रूप से किया जाता है। खेत के कार्यों और परिवहन के लिए लगभग सभी जोत शक्ति बैलों से प्राप्त होती है। चूँकि कृषि अधिकतर मौसमी होती है, इसलिए डेयरी पालन के माध्यम से वर्षभर कई लोगों के लिए रोजगार की संभावना रहती है। इस प्रकार, डेयरी पालन साल भर रोजगार उपलब्ध कराता है।

विश्व बैंक के अनुमानों के अनुसार भारत की 94 करोड़ जन. संख्या में से लगभग 75 प्रतिशत 5.87 लाख गांवों में रहते हैं, जहाँ 145 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि की खेती होती है। औसत खेत आकार लगभग 1.66 हेक्टेयर है। 70 मिलियन ग्रामीण परिवारों में से 42 प्रतिशत 2 हेक्टेयर तक भूमि जोतते हैं और 37 प्रतिशत परिवार भूमिहीन हैं। इन भूमिहीन और छोटे किसानों के पास 53 प्रतिशत पशु हैं और वे 51 प्रतिशत दूध का उत्पादन करते हैं। अतः देश के दूध उत्पादन में इनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

डेयरी पालन एक मुख्य व्यवसाय के रूप में भी अपनाया जा सकता है, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों के आस–पास जहाँ दूध की मांग अधिक होती है।

डेयरी किसानों के लिए अनुशंसित सामान्य प्रबंधन पद्धतियाँ

डेयरी खोलने के लिए कई बातों का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है, ये बातें निम्नलिखित है –

डेयरी खोलने के लिए आवास व्यवस्था:

- शेड सूखी और ऊंची जमीन पर बनाएँ।
- जल जमाव और भारी वर्षा वाले क्षेत्रों से बचें।
- शेड की दीवारें 1.5 से 2 मीटर ऊँची और छत 3–4 मीटर ऊँची हों।
- दीवारें नमी–रोधी प्लास्टर की हों।
- शेड हवादार हो और फर्श पक्का, ढलानयुक्त (3 से.मी./मीटर), फिसलन रहित तथा स्वच्छ हो।
- पशु के लिए पर्याप्त स्थान, छायादार क्षेत्र, ठंडा पानी, उचित सफाई, और परजीवी नियंत्रण की व्यवस्था हो।

पशु का चयन:

- ऋण मिलने के तुरंत बाद विश्वसनीय विक्रेता से स्वस्थ पशु खरीदें।
- दूसरीध्तीसरी बियाई में ताजा ब्याई पशु लें।
- दूध उत्पादन का आकलन करके ही खरीदें।
- दो दुधारू पशुओं की न्यूनतम इकाई खरीदें और दूसरे पशु को 5–6 माह बाद खरीदें।

पशुओं का आहार:

- उच्च गुणवत्ता का चारा दें।

- हरा चारा पर्याप्त मात्रा में हो, कटा हुआ व उचित समय पर काटा गया हो।
- खलियां अच्छी गुणवत्ता की हों।
- खनिज, विटामिन, नमक आदि की पूर्ति करें।
- गर्मी में स्नान या पानी का छिड़काव करें।
- शरीर के वजन का 2.5–3% सूखा आहार प्रतिदिन दें।

दुग्ध दुहन:
- प्रतिदिन 2–3 बार एक ही समय पर दूध दुहें।
- दूध दोहते समय सफाई का विशेष ध्यान रखें।
- बीमार पशु का दूध अंत में दुहें।

रोग से सुरक्षा:
- पशुओं के व्यवहार में बदलाव पर सतर्क रहें।
- बीमार पशु को अलग करें और पशु चिकित्सक से सलाह लें।
- ब्रूसेलोसिस, टीबी, मास्टाइटिस आदि की नियमित जांच कराएं।
- समय–समय पर कृमिनाशक दवाएं दें।

प्रजनन देखभाल:
- गर्मी के समय, गर्भधारण, प्रसव आदि का रिकॉर्ड रखें।
- बियान के 60–80 दिनों के भीतर पशु को गाभिन कराएं।

गर्भावस्था में देखभाल:
- बियान से दो महीने पहले अतिरिक्त ध्यान दें – आहार, जगह, पानी इत्यादि।

दूध विपणन:
- दूध तुरंत और स्वच्छ बर्तनों में बिक्री हेतु भेजें।
- दूध के बर्तनों को क्लोरीन युक्त पानी से धोकर साफ रखें।
- ठंडे समय में दूध का परिवहन करें।

बछड़ों की देखभाल:
- जन्म के तुरंत बाद नाभि को टिंचर आयोडीन से साफ करें।
- 30 मिनट के भीतर बछड़े को खीस (कोलोस्ट्रम) पिलाएं।
- 2 महीने तक बछड़े को अलग रखें, टीका लगवाएं, सींग हटवाएं (डेहॉर्निंग) करें।

डेयरी खोलने के लिए वित्तीय सहायता

NABARD (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) डेयरी योजनाओं के लिए ऋण और पुनर्वित्त सुविधा प्रदान करता है। किसान अपने निकटतम वाणिज्यिक या सहकारी बैंक शाखा में आवेदन कर सकते हैं। तकनीकी अधिकारी या बैंक प्रबंधक सहायता करेंगे।

बड़ी डेयरी योजनाओं के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बनानी होती है जिसमें शामिल होते हैं:
- पशुओं की खरीद
- शेड का निर्माण
- उपकरणों की खरीद
- शुरुआती आहार का खर्च
- परिवहन, गोदाम, प्रोसेसिंग इत्यादि

भूमि की लागत को ऋण में शामिल नहीं किया जाता, लेकिन यदि भूमि डेयरी के लिए खरीदी जाती है तो इसकी लागत को कुल परियोजना लागत का 10: तक किसानों की अंश पूंजी के रूप में माना जा सकता है।

एलोवेरा की खेती: लाभ, विधि और प्रमुख किस्में

एलोवेरा, जिसे घृतकुमारी भी कहा जाता है, एक गूदेदार, रसीला पौधा है जो सामान्यतः तना रहित या बहुत कम तने वाला होता है। इसकी लंबाई 60 से 100 सेंटीमीटर तक होती है। इसका प्रसार निचली शाखाओं के माध्यम से होता है। इसकी पत्तियाँ मोटी, मांसल और भालाकार होती हैं, जिनका रंग हरा या स्लेटी–हरा होता है। कुछ किस्मों में पत्तियों की सतह पर सफेद धब्बे भी पाए जाते हैं।

एलोवेरा का औषधीय महत्व

एलोवेरा जैल का उपयोग घरेलू औषधि के रूप में व्यापक रूप से किया जाता है, इसलिए इसे शफर्स्ट–एड प्लांटश या शमेडिसिन प्लांटश भी कहा जाता है। यह जैल जलन, घाव और धूप से प्रभावित त्वचा पर राहत देने के लिए लगाया जाता है। साथ ही, यह एक प्रभावी मॉइस्चराइजर के रूप में चेहरे पर प्रयोग किया जाता है। इसके त्वचा लाभकारी गुणों के चलते इसे सौंदर्य और चिकित्सा उद्योग में विशेष स्थान प्राप्त है।

एलोवेरा की खेती की आवश्यकता क्यों है

एलोवेरा की खेती आजकल सजावटी और औषधीय पौधे के रूप में बड़े पैमाने पर की जा रही है। इसकी पत्तियों में जल संग्रह करने की क्षमता इसे सूखे और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी जीवित रखती है, जिससे यह विशेष रूप से शुष्क और पठारी इलाकों के किसानों के लिए लाभदायक है। हालांकि यह पौधा हिमपात और पाले को सहन नहीं कर सकता। सामान्यतः यह कीट–प्रतिरोधी होता है, लेकिन कुछ कीट जैसे मीली बग, एफिड और पटरी कीट इसकी वृद्धि को प्रभावित कर सकते हैं। इसकी खेती के लिए अच्छी जल निकासी वाली बालू या दोमट मिट्टी तथा तेज धूप आवश्यक है। ठंड के मौसम में यह निष्क्रिय अवस्था में चला जाता है और तब इसे कम पानी की आवश्यकता होती है। शीतलहर वाले क्षेत्रों में ग्रीनहाउस में इसका संरक्षण उचित रहता है। भारत सहित कई देशों जैसे अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, क्यूबा, दक्षिण अफ्रीका आदि में इसका व्यवसायिक उत्पादन किया जाता है।

उपयुक्त मिट्टी

एलोवेरा एक मजबूत पौधा है और यह विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उग सकता है। यह तटीय रेतीली और दोमट मिट्टी में अच्छी पैदावार देता है। मिट्टी का पीएच 8.5 तक होना उपयुक्त होता है, लेकिन जलभराव और क्षारीय मिट्टी इसकी वृद्धि के लिए हानिकारक हैं।

जलवायु और वर्षा

एलोवेरा की बुवाई का उपयुक्त समय मार्च से जून के बीच होता है। यह पौधा आर्द्र और शुष्क दोनों प्रकार की जलवायु में पनप सकता है। यह 35 से 200 सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में उगाया जा सकता है। शुष्क इलाकों में इसे पूरक सिंचाई की आवश्यकता हो सकती है।

भूमि की तैयारी

खेती से पहले खेत की दो बार हैरो या कल्टीवेटर से जुताई करनी चाहिए। जल निकासी की बेहतर व्यवस्था के लिए आवश्यकतानुसार नालियाँ बनाई जानी चाहिए।

खाद प्रबंधन

एक एकड़ खेत में लगभग 10 टन गोबर की खाद डालना उपयुक्त रहता है। एलोवेरा बिना खाद के भी अच्छी पैदावार दे सकता है, लेकिन अगर खाद का प्रयोग किया जाए तो केवल जैविक खाद ही उपयोग करें ताकि गुणवत्ता बनी रहे।

प्रमुख किस्में

एलोवेरा की कुछ प्रमुख किस्में हैं:

- IC 111271
- IC 111280
- IC 111269
- IC 111273
- L&2, L&5, L&9

बुवाई विधि

एलोवेरा की बुवाई सकर या राइजोम–क. टिंग के माध्यम से की जाती है। 15–18 सेमी लंबी जड़ वाली कटिंग को इस तरह मिट्टी में लगाया जाता है कि दो–तिहाई हिस्सा मिट्टी में दबा हो। पौधे से पौधे की दूरी 60 सेमी तथा कतारों के बीच की दूरी भी 60 सेमी रखनी चाहिए। एक एकड़ में लगभग 11,000 पौधे लगाए जा सकते हैं।

फसल की कटाई

बुवाई के 8 से 10 महीने बाद एलोवेरा की फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है। पहले साल में प्रति एकड़ लगभग 10 टन उपज मिलती है, जो दूसरे साल में 15–20% तक बढ़ जाती है।

काली हल्दी की खेती और इससे होने वाले लाभ से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी

भारत के हर घर की रसोई में कई प्रकार के मसालों का उपयोग किया जाता है जिनमे से हल्दी का नाम सबसे पहले आता है। हल्दी दो प्रकार की होती है पिली हल्दी और काली हल्दी। पिली हल्दी की खेती के बारे में तो आप जानते ही है, इसकी प्रकार काली हल्दी भी बहुत मथावपूर्ण है इसकी हेति से किसानों को भी अच्छा खासा मुनाफा हो सकता है इस लेख में हम आपको काली हल्दी की खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकरी देंगे।

काली हल्दी कैसी होती है?

काली हल्दी का कंद (राइजोम) स्वाद में कड़वा, तीखा और तासीर में गर्म होता है, तथा इसमें एक सुखद सुगंध होती है। इसमें जीवाणुरोधी (एंटी–बैक. टीरियल) और कवकरोधी (एंटी–फंगल) गुण होते हैं, और यह एक सौम्य विरेचक (लैक्सेटिव) के रूप में कार्य करती है। यह मस्तिष्क और हृदय के लिए एक टॉनिक के रूप में उपयोग की जाती है। 2016 से, काली हल्दी को भारतीय कृषि विभाग द्वारा संकटग्रस्त (एंडेंजर्ड) प्रजाति के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। ओडिशा राज्य में, जो पूर्वी तट पर बंगाल की खाड़ी के किनारे स्थित है, काली हल्दी को संरक्षित और संरक्षित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

काली हल्दी के उपयोग और इसमें पाई जाने वाले रासायनिक घटक

काली हल्दी का उपयोग कई प्रकार के रोगो के उपचार के लिए किया जाता है इसमें कई प्रकार के एंटीऑक्सीडेंट होते है जो की बीमारियों को जड़ से खत कर सकते है। काली हल्दी के उपयोग और इसमें पाई जाने वाले रासायनिक घटक निम्नलिखित दिए गए है –

काली हल्दी के उपयोग

काली हल्दी के कंदों का उपयोग श्वेत कुष्ठ (ल्यूकोडर्मा), बवासीर, ब्रोंकाइटिस, अस्थमा, ट्यूमर, गले की तपेदिक ग्रंथियों, प्लीहा वृद्धि, मिर्गी के दौरे, सूजन और एलर्जी से होने वाले चकत्तों के इलाज में किया जाता है। काली हल्दी पूर्वोत्तर और मध्य भारत की मूल निवासी है, जहां यह सांस्कृतिक अनुष्ठानों और पारंपरिक औषधीय उपच. ारों का हिस्सा रही है। मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र राज्य के कई आदिवासी समुदायों द्वारा काली हल्दी का उपयोग किया जाता है। यह जड़ी–बूटी भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के बाजारों में ताजा या सूखी अवस्था में बेची जाती है।

काली हल्दी पाई जाने वाले रासायनिक घटक

काली हल्दी के सूखी कंदों (ब्नतबनउं बंमेपं) में 1.6% आवश्यक तेल पाया गया है, जिसमें 76-6% डी–कैंफर, 8-2% कैंफीन और बॉर्निलीन, और 10-5: सिसक्वीटर्पीन, कुर्कुमिन, आयोनोन और टरमेरोन शामिल होते हैं।

काली हल्दी के लिए जलवायु

Curcuma Caesia (काली हल्दी) आमतौर पर नम पर्णपाती और आर्द्र क्षेत्रों में उगाई जाती है। काली हल्दी लगाने का सबसे अच्छा मौसम वसंत (spring) या गर्मी (summer) का होता है। इसे उगाने के लिए गर्म और आर्द्र (humid) जलवायु की आवश्यकता होती है। गर्म क्षेत्रों में काली हल्दी के पौधे को अधिक धुप वाले स्थानों में नहीं नहीं लगाना चाहिए। इसकी खेती के लिए तापमान 15 से 40 डिग्री सेन्टीग्रेट होना चाहिए।

काली हल्दी की खेती के लिए मिट्टी की आवश्यकता

यह जैविक पदार्थों से भरपूर, नम और अच्छी तरह से जलनिकासी वाली मिट्टी में अच्छी तरह उगती है। इसे हल्की काली, दोमट और लाल मिट्टी से लेकर चिकनी दोमट मिट्टी तक में उगाया जाता है, लेकिन सबसे अच्छी पैदावार बालूयुक्त या चिकनी दोमट मिट्टी में मिलती है। वसंत से पतझड़ तक पूरे बढ़ने के मौसम में मिट्टी को नम रखें और इस दौरान तरल खाद (liquid fertilizer) देना आदर्श होता है।

फसल की परिपक्वता और कटाई

फसल को पकने में लगभग 9 महीने लगते हैं। इसकी कटाई जनवरी के मध्य में की जाती है। कंदों को खोदने से पहले मिट्टी में सिंचाई करके उसे नम किया जाता है ताकि कंदों को नुकसान न पहुंचे। कंदों को चोट लगने से उनका सड़ना शुरू हो सकता है।

कटाई के बाद प्रबंधन

छिले हुए, आधे कटे या टुकड़ों में काटे गए कंदों को 55°ब तापमान पर ओवन में या फिर अच्छी हवा–दार छाया में सुखाना चाहिए। सूखने के बाद इन्हें नमी–रोधी (damp&proof) कंटेनरों में सुरक्षित रूप से संग्रहित करना चाहिए। सूखे कंदों में लगभग 1-6% आवश्यक तेल पाया गया है, जिसमें 76-6% डी–कैफर, 8-2% कैE फीन और बॉर्निलीन तथा 10-5% सिसक्वीटर्पीन, कुर्कुमिन, आयोनोन और टरमेरोन शामिल होते हैं।

MASSEY FERGUSON
TAFE
65 YEARS
MASTER OF PUDDLING
7052 L
MASSEY FERGUSON
7052 L
SPLASH PROTECT FENDER
FULLY SEALED 4WD FRONT AXLE
20% LESSER WEIGHT COMPARED TO TRADITIONAL 4WD TRACTORS

अरहर की खेती में लगने वाले प्रमुख रोग, उनके लक्षण और प्रबंधन

अरहर की खेती भारत में कई स्थानों पर की जाती है। अरहर की खेती खरीफ की फसल के रूप में की जाती है। इसकी दाल की कीमत अच्छी खासी होती है। अरहर की खेती के लिए कम पानी की आवश्यकता होती हैं। इसलिए इसको कम वर्षा वाले क्षेत्रों में उगाया जाता हैं। अरहर की खेती में किसानों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं जिससे उपज में कमी आती हैं। अरहर की खेती में किसानों को सबसे अधिक रोगों के कारण नुकसान का सामना करना पड़ता हैं। अगर समय रहते किसान रोग की पाचन करके इसकी नियंत्रण कर लेते हैं तो नुकसान को कम किया जा सकता हैं। इस लेख में हम आपको अरहर की खेती में लगने वाले प्रमुख रोग और उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी देंगे।

अरहर के प्रमुख रोगों के लक्षण और प्रबंधन

अरहर की फसल में कई प्रकार के रोग लगते हैं जिससे की फसल को भारी नुकसान होता हैं, इन में से कुछ प्रमुख रोग हैं जिनके लक्षण और प्रबंधन के उपाय निचे दिए गए हैं –

विल्ट – फ्यूजेरियम उडुम (Fusarium udum)

अरहर का यह रोग पौधे की प्रारंभिक अवस्था (4–6 सप्ताह की उम्र) से लेकर फूल आने और फली बनने तक किसी भी समय फसल को संकर्मित कर सकता हैं। यह रोग धीरे–धीरे पौधे के मुरझाने और सूखने के रूप में सामने आता है। इस रोग के प्रमुख लक्षण पत्तियों का पीला पड़ना और तने का कॉलर भाग से शाखाओं की ओर काला पड़ना होता हैं, जिससे पत्तियाँ, तना और शाखाएँ झुक जाती हैं और समय से पहले सूखकर पूरा पौधा मर जाता है। रोग से संकर्मित पौधे के संवहनी ऊतकों (vascular tissues) में भूरी रंग की विकृति (discoloration) दिखाई देती है। अक्सर तने और जड़ प्रणाली का केवल एक हिस्सा प्रभावित होता है जिससे आंशिक मुरझाहट होती है।

विल्ट रोग के प्रबंधन:

रोग के प्रकोप को खतम करने के लिए बुवाई से पहले बीजों को कार्बेन्डाजिम या थिरम से 2 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित करें या ट्राइकोडर्मा विरिडे से 4 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से लेपित करें। विल्ट को खत्म करने के लिए िमखेत में भारी मात्रा में गोबर की खाद या हरी खाद जैसे ग्लिरीसिडिया मैकुलाटा 10 टन प्रति हेक्टेयर डालें या नीम की खली 150 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से मिलाएं।

पाउडरी मिल्ड्यू – लेविलुला टॉरिका (Leveillula taurica)

पाउडरी मिल्ड्यू से फरभावित पत्तियों की निचली सतह पर सफेद पाउडर जैसा कवक बन जाता हैं। इसके विपरीत ऊपरी सतह पर पीले रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। यह सफेद पाउडर कवक के कंडीओफोर और कंडीया से बना होता है। गंभीर संक्रमण की स्थिति में यह सफेद कवक पत्तियों की ऊपरी सतह पर भी फैल जाता है। पाउडरी मिल्ड्यू रोग के तीव्र संक्रमण से पत्तियाँ समय से पहले झड़ जाती हैं और पौधा सुख जाता हैं।

पाउडरी मिल्ड्यू का प्रबंधन:

- पाउडरी मिल्ड्यू रोग के नियंत्रण के लिए रोग प्रति. रोधी किस्म का चुनाव करे।
- पाउडरी मिल्ड्यू रोग की शुरुआत में कार्बेन्डाजिम 500 ग्राम/हेक्टेयर या वेटेबल सल्फर 2 किलोग्राम/हेक्टेयर का छिड़काव करें और 15 दिनों के अंतराल पर दोहराएं।

स्टेम ब्लाइट – फाइटोफ्थोरा ड्रेक्सलेरी फॉरमा स्पेशलिस कजानी (Phytophthora drechsleri f-sp- cajani)

अरहर की खेती में स्टेम ब्लाइट के लक्षण शुरुआत में तने के निचले हिस्से पर बैंगनी से गहरे भूरे रंग के गले हुए धब्बे (नेक्रोटिक लेशन्स) के रूप में दिखाई देते हैं, जो बाद में ऊपरी हिस्सों में भी फैल सकते हैं। रोग की शुरुआती अवस्था में ये धब्बे छोटे और चिकने होते हैं, लेकिन बाद में ये बड़े और दबे हुए हो जाते हैं। संक्रमित ऊतक नरम हो जाते हैं और पूरा पौधा मर सकता है। बड़े पौधों में संक्रमण आमतौर पर तने के निचले हिस्से तक सीमित रहता है। संक्रमित छाल भूरी हो जाती है और ऊतक नरम हो जाते हैं जिससे पौधा टूट कर गिर जाता है। अगर संक्रमण पत्तियों में हैं तो पीले रंग का धब्बा पत्तियों के किनारे और सिरे से शुरू होकर मध्यशिरा (mid&rib) की ओर फैलता है। धब्बे का केंद्र बाद में भूरा और सख्त हो जाता है। ये धब्बे बड़े होकर पूरी पत्ती को ढँक लेते हैं जिससे पत्तियाँ सूख जाती हैं।

स्टेम ब्लाइट का प्रबंधन:

- स्टेम ब्लाइट रोग के नियंत्रण के लिए बीजों को मेटालेक्सिल 6 ग्राम/किलोग्राम की दर से उपचारित करें।
- अगर कड़ी फसल में रोग दिखाई देता हैं तो मेटालेि. क्सल 500 ग्राम/हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- रोग से बचाव के लिए बुवाई का समय इस प्रकार समायोजित करें कि फसल की वृद्धि अधिक वर्षा के समय से न टकराए।

बाजरे की खेती में लगने वाले रोग, लक्षण और उनके नियंत्रण

भारत में बाजरा की खेती सूखे क्षेत्रों में की जाती है। बाजरे को कम पानी की आवश्यकता होती है। बाजरा का अंग्रेजी नाम पर्ल मिलेट है। बाजरे की खेती कम पानी वाले क्षेत्रों में किसानों के लिए अच्छा आय का स्त्रोत है। परंतु कई कारणों से बाजरा उत्पादन करने वाले किसानों को भी घाटे का सामना करना पड़ सकता है। जिनमें से सबसे बड़ा कारण है बाजरे की खेती में लगने वाले रोग। ये रोग फसल की उपज को सीधा नुकसान पहुंचाते है, इसलिए समय से फसल में रोग नियंत्रण बहुत आवश्यक है। इस लेख में हम आपको बाजरे की खेती में लगने वाले रोग उनके और नियंत्रण के बारे में जानकारी देंगे।

बाजरे के प्रमुख रोगों के लक्षण और नियंत्रण उपाय

बाजरे की खेती में रोगों की पहचान के लिए किसानों को लक्षणों का ज्ञान होना बहुत आवशय होता है। किसानों के लिए यहाँ जानना भी आवश्यक है कि रोगों की गंभीरता और प्रसार विभिन्न कारकों जैसे कि जलवायु,कृषि पद्धतियों और विशिष्ट क्षेत्र जहां बाजरा उगाया जाता है, के आधार पर अलग हो सकते हैं। नीचे बाजरे के प्रमुख रोगों के लक्षण और नियंत्रण उपाय दिए गए है।

स्मट रोग (टॉलीपोस्पोरियम पेनिसिलारिया)

बाजरे की खेती में ये रोग स्मट कवक के कारण होता है। बाजरे का स्मट रोग टॉलीपोस्पोरियम पेनिसिलारिया नमक कवक के कारण होता है। बाजरे का स्मट रोग जहां बीज बनता है उस भाग को संकर्मित करता है। रोगाणु कुछ फूलों को संक्रमित करता है और उन्हें स्मट बीजाणुओं से युक्त मोटे पिंडों में बदल देता है, जो सामान्य फूलों और दानों की जगह ले लेते हैं।

नियंत्रण के उपाय

- इस रोग के नियंत्रण के लिए बीजों को बुवाई से पहले कवकनाशी या गर्म पानी से उपचारित करें।
- रोग को नियंत्रित करने के लिए अनुशंसित अंतराल पर कवकनाशी का प्रयोग करें।
- रोग से संक्रमित पौधों या पौधों के हिस्सों को हटा दें और नष्ट कर दें।

डाउनी मिल्ड्यू (स्क्लेरोस्पोरा ग्रैमिनीकोला)

- डाउनी मिल्ड्यू बाजरे के पौधे की पत्तियों को प्रभावित करता है। रोग से प्रभावित पौधों पर पीले या जामुनी रंग के धब्बे बन जाते हैं, जो बाद में भूरे होकर सूख जाते हैं।
- शुरुआती लक्षण तीन से चार पत्ती अवस्था में अंकुरों में दिखाई देते हैं। प्रभावित पत्तियों की ऊपरी सतह पर हल्के हरे से हल्के पीले रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।
- पत्तियों की निचली सतह पर स्पोरैंगियोफोर और स्पोरैंगिया से युक्त कवक की सफेद कोमल वृद्धि होती है।

नियंत्रण के उपाय

- डाउनी मिल्ड्यू रोज से बचाव के लिए प्रति. रोधी किस्मों का प्रयोग करें।
- बुवाई से पहले बीजों को Metalayl at 6g/kG फफूंदनाशकों से उपचारित करें।
- रोग नियंत्रण के लिए बुवाई से 20 दिन बाद मैंकोजेब 2 किग्रा या मेटालैक्सिल् मैनकोजेब 1 किग्रा/हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

एरगोट (क्लैविसेप्स फ्यूसीफॉर्मिस)

- बाजरे का ये रोग के फूलों और दानों को प्रभावित करता है, यह कठोर, काले और लम्बे कवकीय पिंडों के निर्माणकी ओर ले जाता है।
- बाजरा को उन खेतों में लगाने से बचें जहां पहले अरगोट की समस्या रही हो।
- कार्बेन्डाजिम 500 ग्राम या मैनकोजेब 2 किग्रा या जीरम 1 किग्र. ाध्हेक्टेयर 5–10 प्रतिशत होने पर छिड़काव करें।
- फूल खुल गए हैं और फिर से 50 प्रतिशत फूल आने की अवस्था में हैं।

सेब की फसल में लगने वाले रोग, लक्षण और नियंत्रण के उपाय

सेब की खेती पहाड़ी इलाकों में ज्यादा की जाती हैं। सेब की खेती के लिए ठन्डे तापमान की आवश्यकता होती हैं। सेब की खेती में किसानों को बहुत सारी कठनाइयों का सामना करना पड़ता हैं। जिमसे से सेब की फसल में लगने वाले रोग सबसे प्रमुख हैं। आज के इस लेख में हम आपको सेब की फसल में लगने वाले प्रमुख रोगो के बारे में जानकारी देंगे जिससे की फसल में समय रहते इन रोगों का नियंत्रण आसानी से हो सकें।

सेब के प्रमुख रोग, लक्षण और नियंत्रण के उपाय

वैसे तो सेब की फसल कई रोगों से प्रभावित होती हैं, निचे हमने कुछ प्रमुख रोगों के लक्षण और नियंत्रण के उपाय दिए हैं जिससे आसनी से रोगों को नियंत्रित किया जा सकता हैं –

1. स्कैब रोग (पत्तियों और फलों पर लक्षण)

सेब का यह रोग पत्तियों और फलों पर दिखाई देता है। पत्तियों के निचले भाग पर जैतूनी रंग के धब्बे बनते हैं जो बाद में गहरे भूरे से काले रंग के हो जाते हैं और मखमली दिखाई देते हैं। नई पत्तियों पर धब्बों के किनारे पंख जैसे (feathery) होते हैं। पुरानी पत्तियों पर धब्बे स्पष्ट रूप से सीमित होते हैं। कुछ धब्बों में पत्ती की सतह उभरी हुई (convex) हो सकती है और दूसरी तरफ धंसी हुई (concave) दिखाई देती है। गंभीर संक्रमण में पत्तियाँ मुड़ जाती हैं, बौनी और विकृत हो जाती हैं। फलों पर छोटे, खुरदरे, काले गोल धब्बे बनते हैं। परिपक्व फलों पर इन धब्बों के चारों ओर पीला घेरा बन जाता है।

रोग नियंत्रण के उपाय

सेब के बाग में साफ–सफाई रखें, गिरी हुई पत्तियों और छांटी गई टहनियों को सर्दियों में इकट्ठा कर जलाएं ताकि रोग की यौन अवस्था न पनप सके।

- फूल आने से पहले Tridemorph 0-1% का छिड़काव करें।
- फल आने की अवस्था में Mancozeb 0-25% का छिड़काव करें।
- पतझड़ में पत्तियों के गिरने से पहले 5% यूरिया और कली निकलने से पहले 2% यूरिया का छिड़काव करें ताकि पत्तियाँ जल्दी सड़ जाएं।

2. पाउडरी मिल्ड्यू (Powdery Mildew)

यह रोग कलियों, फूलों, पत्तियों, टहनियों और फलों पर पाया जा सकता है। वसंत में संक्रमित कलियाँ सामान्य से 5–8 दिन देर से खिलती हैं, कलियाँ मुरझा जाती हैं या विकृत हो जाती हैं। सबसे पहले पत्तियों की निचली सतह पर सफेद, रुई जैसे फफूंद के धब्बे बनते हैं जो जल्द ही पूरी पत्ती को ढक लेते हैं। संक्रमित पत्तियाँ संकरी, सिकुड़ी हुई, अविकसित और भुरभुरी हो जाती हैं और सूख कर झड़ जाती हैं। यह रोग टहनियों तक फैलता है जिससे उनकी वृद्धि रुक जाती है और वे मर भी सकती हैं। संक्रमित कलियों से अगली वसंत में भी रोगग्रस्त पत्तियाँ और फूल निकलते हैं। संक्रमित फूल मुरझा जाते हैं और फल नहीं बनता। जब रोग अधिक फैल जाता है तो फल छोटे, असामान्य रंग के और विकृत हो जाते हैं। यह रोग पौधों को कमजोर कर देता है और अन्य कीटों या सर्दी से नुकसान की संभावना बढ़ जाती है। यह एकमात्र फंगल रोग है जो बारिश या ओस के बिना भी फैल सकता है।

रोग नियंत्रण के उपाय

- रोग से प्रभावित टहनियों को काट कर पेड़ से अलग कर देना चाहिए।
- पाउडरी मिल्ड्यू की रोकथाम के लिए सेब की फसल में Dinocap 0-05% या Chinomethionate 0-1% का छिड़काव करें।

3. तीव्र झुलसा रोग (Blight)

शुरुआती लक्षण पत्तियों पर दिखाई देते हैं जो पानी जैसे धब्बों के साथ दिखती हैं, फिर सिकुड़ कर भूरी से काली हो जाती हैं और गिर जाती हैं या पेड़ पर ही लटकी रह जाती हैं। यह रोग टहनियों तक फैल जाता है। ऊपरी टहनियाँ ऊपर से नीचे की ओर मुरझा जाती हैं और यह शाखाओं तक भी फैल सकता है। फल पानी जैसे धब्बे लिए हुए हो जाते हैं, फिर सिकुड़ते हैं, काले हो जाते हैं और मर जाते हैं। संक्रमित भाग से कभी–कभी रस (ooze) भी निकल सकता है।

रोग नियंत्रण के उपाय

- इस रोग को नियंत्रण करने के लिए संक्रमित भागों और झुलसी हुई टहनियों को काट कर नष्ट करें।
- अगर रोग के लक्षण फसल में दिखाई दें, तो Streptomycin 500 ppm का छिड़काव करें।

4. फल का सड़न रोग (Fruit Rot / Blue mold)

शुरुआती धब्बे फल के डंठल (stem end) से शुरू होते हैं जो हल्के भूरे, पानी जैसे सड़न के रूप में दिखाई देते हैं। फल के पकने के साथ यह सड़न फैलती है और छिलका सिकुड़ जाता है। एक विशेष सड़ी हुई गंध आती है। यदि मौसम नम हो तो नीले–हरे रंग का फफूंद विकसित हो सकता है। यह रोग फलों की त्वचा पर घाव (जैसे कीड़े के काटने या परिवहन में चोट) के कारण फैलता है।

रोग नियंत्रण के उपाय

- फलों को सावधानी से संभालें ताकि घाव न बने।
- फलों को Aureofungin sol 500 ppm में 20 मिनट तक डुबोएं, यह सबसे अच्छा नियंत्रण देता है।

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010